लन्दनके पत्र ।

एक देशभक्तके शिक्षाप्रद और उत्साहवर्धक

पत्रोंका संग्रह ।

सम्पादक,

श्रीयुत बाबू व्रजमोहनलाल वर्मा,

प्रकाशक,

हिन्दी-ग्रन्थरत्नाकर कार्यालय,

बम्बई ।

आश्विन, १९७२.

प्रथमावृत्ति] अक्टूबर १९१५ [मूल्य =)॥

Printed by Chintaman Sakharam Deole, at the Bombay Vaibhav Press, Servants of India Society's Building, Sandhurst Road, Girgaon, Bombay

Published by Nathuram Premi, Proprietor, Jain Granth Ratnakar Karyalaya, Hirabag, Bombay

प्रस्तावना ।

यों तो प्रतिवर्ष ही बीसों पुरुष विलायतसे बैरिस्टरी पास करके आते हैं, परन्तु उनमें बहुत थोड़े ऐसे होते हैं जो देशसेवाको अपना धर्म समझें और देशके प्रति अपने कर्तव्यको स्मरण रक्खे। उन थोडेसे इने गिने देशभक्तोमेंसे *श्रीयुक्त लाला सागरचन्दजी बैरिस्टर भी* एक हैं। *जिस समय आप विलायतमे* थे उस समय यहॉके ॲगरेजी और उर्दू सामायिक पत्रोंमें आपके पत्र प्रकाशित हुआ करते थे। मैं उन्हें बड़े चावसे पढता था और अपने सग्रहमे रखता जाता था। आज उन्हींमेके कुछ पत्र इस छोटीसी पुस्तकके द्वारा हिन्दीभाषाभाषी भाइयोके भेट किये जाते हैं। अनुवाद करते समय मूल पत्रोंमें बहुत कुछ परिवर्तन और सवर्धन किया गया है और ऐसा करना कई अनिवार्य कारणोंसे उचित समझा गया है।

यदि इस पुस्तकके पढनेसे एक भी नवयुवकके हृदयमें देशसेवाका उत्साह उत्पन्न हो गया, तो मैं अपने परिश्रमको सफल समझूँगा।

मैं अपने *मित्र श्रीयुक्त रामकृष्ण मिश्रका और पं० शिवसहाय चतुर्वेदीका* कृतज्ञ हूँ जिन्होंने मुझे इस कार्यमें यथेष्ट सहायता दी है।

छिन्दवाडा सी पी } **व्रजमोहनलाल वर्मा।**

लन्दनके पत्र ।

पहला पत्र ।

प्यारे शिक्षित देशभाईयो ! मेरी इच्छा है कि जब तक मै यूरोपमें रहूँ, आपके लिए प्रतिसप्ताह एक पत्र वहाँके सामयिक समाचारपत्रोंमें प्रकाशित होनेके लिए भेजा करूँ। आशा है कि आप लोग इन पत्रोंको प्रेम और ध्यानपूर्वक पढा करेंगे, क्योंकि ये पत्र बडे परिश्रमसे तैयार किये जाते है। आज यह पहला पत्र भेजता हूँ—

जो जाति जिस समय अधोगतिको प्राप्त होती है, वह उस समय अपने झूठे घमडों वा काल्पनिक गौरवमें मस्त रहती है। ऐसी जाति या राष्ट्रकी मुख्य पहचान यह है कि वह स्वय कुछ न करके अपने पूर्वजोंकी करतूतों पर अकडा करती है। अपने देशभक्तोंका अनादर करके उनके विदेशके कार्यपर मारे खुशीके फूली नहीं समाती, उनकी कृतकार्यता (कामयाबी) पर व्यर्थ अभिमान करती है—नाहक शेखी मारती है। देखो, स्वामी विवेकानदजीने बाहर कैसा काम किया ? स्वामी रामतीर्थके सामने प्रेसीडेंट रुजवेल्टने सिर झुकाया। परंतु इससे यहाँवालोंको क्या ? स्वामी विवेकानंदजी लिखते है—" मै बारह वर्ष तक अपने देशमें देश, समाज वा राष्ट्रसेवाका कोई मार्ग (ज़रिया) न पाकर अमेरिका गया।" खेद है कि स्वदेशवालोंने उन्हें कार्यक्षेत्र ही न दिया ! बाबू रवीन्द्रनाथ ठाकुरका ' नोवल प्राइज ' (पुरस्कार) मिलनेके पहले क्या कभी किसी हिन्दूने ऐसा सत्कार किया था—जैसा कि आज हो रहा

है? आज सारा भारतवर्ष उनके गौरवसे अपनेको धन्य समझता है और मारे खुशीके फूल रहा है। जगदीशचन्द्र वसुका विदेशोंमे कैसा आदर हो रहा है? यूरोप और अमेरिकाकी कई बड़ी बडी संस्थाओंने उनको निमत्रण देकर बुलाया और उनके आविष्कारोंको देखकर लाभ उठाया। भारतवासी कहते है–"ऋषिनिवास भारतभूमि, तुझे धन्य है! जगदीशचन्द्र वसु तेरा ही सपूत है–उसने सारे भारतवर्षकी इज्जत बढ़ाई। हम लोग ऋषिसतान है, क्या नहीं कर सकते? क्या नही सीख सकते? केवल अवसर मिलना चाहिये।" परन्तु इन्ही जगदीशचन्द्रको भारतकी किसी भी सस्थाने कभी निमत्रण देकर नही बुलाया–कभी उनकी बात नहीं सुनी। ऋषिकुल, गुरुकुल, हिन्दूकालेज, मोहम्मडन-कालेज, दयानदकालेज आदि सभी कानोंमें तेल डाले, उनपर यूरोप या अमेरिकाके सन्मानकी सील (मुहर) लगजानेकी बाट जोह रहे थे। क्या हिन्दू, क्या मुसलमान किसीने भी उनको अपने कालेजके प्रिन्स-पल बनानेकी कल्पना तक नही की। देखा, हम लोग अपने विद्वान् भाइयोंका कैसा आदर करते हैं!

प्रोफेसर बसुको अन्य देशोंमें कितना ही मान क्यो न मिले, वे किसी बड़े भारी राजपद्पर क्यों न बिठला दिये जावे–इससे भारतवर्षको क्या? भारतीयोंको उन पर नाज करनेका कोई अधिकार नहीं। हिन्दूलोग कहा करते है कि भारतवर्ष जातीयतामें संसारकी किसी कौमसे कम नहीं है। परन्तु वास्तवमे देखा जाय तो संसारकी यही पहली जाति है कि जिसने न अपनी इज्जत करना सीखा और न जो कभी अपने पैरों खडी रह सकी। मेरी रायमें तो यह जाति स्वावलम्बन और अपना आदर करनेमें दुनियाभरकी सब जातियोंसे पीछे है। कविता या सायंस पर इनाम मिलने और एक दो भारतीयोका सन्मान होनेसे यह कभी दूर नहीं हो सकती है। जब तक हिन्दू लोग अपनी कदर करना आप

न सीखेंगे–जब तक अपने योग्य और विद्यावान् पुरुषोंकी विद्यासे लाभ उठाना न सीखेंगे तब तक यह कमी बनी ही रहेगी। हिन्दूरत्न विदेशोंमें बडी बडी इनामें पावें–इससे हिन्दुओंको क्या ? हिन्दुओंको कोई लाभ नहीं पहुँच सकता । अरबिन्द बाबु कलकत्ता राष्ट्रीय कालेजके प्रिन्सिपल थे, परन्तु उनके हटजानेके पश्चात् कालेजकी अधोगतिको कोई न रोक सका। हिन्दू उसे उनके स्थापित आदर्श पर कायम न रख सके। अमेरिकाके एक प्रसिद्ध विश्वविद्यालयमें सुधीन्द्र बोस पोलिटिक साइस (राजनीति) के प्रोफेसर है । यह कोई मामूली इज्जत नहीं हे, अमेरिकामे प्रोफेसर हर कोई नही हो सकता। यदि मान लिया जाय कि बोस महाशय भारतवर्षमें आकर मातृभूमिकी सेवा करना चाहे, तो बतलाइये कितने हिन्दू, मुसलमान 'राजनीति' विषयको अपने कालेजके पाठ्यक्रममे स्थान देनेको तैयार होगे ? हिन्दू राजनीतिकी वर्णमाला भी नही जानते, परन्तु एक हिन्दू अमेरिकामें राजनीति पढाता है–यह सुनकर भारतवासियोके दिमाग आकाशसे बाते करेंगे। परन्तु यह स्मरण रखना चाहिये कि एक आदमीके विद्वान् हो जानेसे सारा राष्ट्र विद्वान नही कहा जा सकता । एक हिन्दू जर्मनीमें भी प्रोफेसर है, परन्तु शोक कि हम अपने विद्वानोंका सन्मान करना नहीं जानते।

पश्चिमी लोग नीचसे भी नीच जातिसे गुण सीखनेमें नहीं हिचकते। इसे वे कलंक नही प्रत्युत गौरव समझते है। यही कारण है कि अमेरिकादि देशोंमे प्रत्येक विदेशीकी बात बड़े ध्यानसे सुनी जाती है। वे इस ताकमे रहते है कि कहींसे कोई नई बात मिल जावे। पश्चिमीलोग गुण ग्रहण करनेके लिए एशिया या हिन्दू इन नामोंसे द्वेष नहीं रखते है, कारण कि वे विद्याप्रेमी है–वे हरजातिसे गुण ग्रहण करना चाहते है। परन्तु शोक है कि हिन्दू इन्हीं बातोंको बुरी समझते है। एक पंजाबी कवि महाशय भारतमातासे यह पुकार करते हैं—

"**मेरे लाल जो सिखाते थे कभी औरोंसे अब हैं सीखते।**"

मानों औरोंसे सीखना कोई बडा पाप है। यदि हिन्दू औरोंसे सीखते, तो इस अवनतिकी दशाको न पहुँचते। हम तो अँगरेजोंकी प्रशंसा करेंगे कि वे एक आधीन और विजित देशके विद्वानोंको बुलाकर उनसे सीखनेमें कुछ भी संकोच नही करते। क्या कभी किसी देशी राजा, मठके महंत, गुरु या समाजने किसी योग्य विदेशीको बुलाकर उनसे कुछ लाभ उठानेका प्रयत्न किया है? क्या काशीके पंडितोंने हिन्दुओकी उन्नतिमें कभी भाग लिया है? नदियाके कारनामे विदेशी लोग नहीं जानते, परन्तु इस विचारसे कि यह हिन्दुओंका प्राचीन विद्यापीठ है—वहॉ आज भी कई जापानी और यूरोपियन विद्या सीखते है। परन्तु काशी और नदियाके किसी भी पंडितने कभी किसी यूरोपीय विद्वान्को नही बुलाया।

रूस-जापानयुद्धके पश्चात् एक जापानीने यह प्रसिद्ध किया था कि उसने अपने नवाविष्कृत 'बेतारके तार' से युद्धमें काम लिया था। यह समाचार पाते ही अमेरिकाके एक विश्वविद्यालयने उस जापानीको निमन्त्रण देकर बुलाया। परन्तु हमारे किसी गुरुकुल, कालेज या शिक्षासमितिको इसकी क्या खबर! रूस-जापान-युद्धमे जापानको विजय मिलनेपर सबसे अधिक घमड और अभिमान भारतवर्षहीने दर्शाया था। भारतवासी कहते थे—"देखा, यह एशियाई शेर है! शेरके सामने कही रूसी भालू ठहर सकता है? क्यो न हो हिन्दुस्तानका तो वह बच्चा है! जापानी बौद्ध है हमारे घरके है।" हम कहते है-"हे झूठा घमंड करनेवाले भारत, तुझे बधाई है!"

भारतवर्ष स्वयं अपनेको गुरु और स्वामी, तथा सारे ससारको अनधिकारी और शिष्य समझता है। यदि प्राचीन हिन्दू ऐसा कहते तो एक तरहसे ठीक भी था, परन्तु आजकलके हिन्दुओंको जो केवल वचनशूर ही है—ऐसा कहनेका कोई अधिकार नही है। इधर विलायत-

यात्रा करनेवालोंको जातिसे बहिष्कृत करना और उधर उनके सन्मान पर हर्षकी तालियाँ बजाना—ये दुरगी बातें कैसी ?

पनामाकी प्रदर्शनीमें छ महापुरुष ससारसे निमत्रित किये गये है, परन्तु उनमें न कोई विवेकानदका चेला है और न रामतीर्थका। हिन्दुओंकी तरफ़से पहला नाम एनीबेसेटका है। यूरोप या अमेरिकावाले इस लेडीकी कर्मशीलताको जानते है—वे इसकी विद्वत्ताके भी कायल है। परन्तु हिन्दुओंको बातूनी जमाखर्चमे लगे रहनेके कारण अवकाश कहाँ ?

स्वर्गीय लैफ्टिनेट कर्नल सुरेशविश्वास ससारमें जबर्दस्त कर्नल माने गये। परन्तु भारतवर्षमे बगाली ढीली धोतीवाले, मरहट्ठे बेईमान, बनिये चालाक, पुरबिये लट्ठ, कायस्थ लम्पट, काश्मीरी बज्ज़ात और गुजराती गॉडे कहे जाते है! भारतवर्षकी ऐसी कोई जाति नही, जिसपर कलकके धब्बे—द्वेषके छींटे न फेंके जाते हों।

हे युवको! तुम इन झगड़ोंमें न फॅसकर अपने लोगोंकी कदर करना सीखो। हिन्दुस्तानकी तग गलियोंको छोड़कर यूरोपके मैदानोंमें जाओ। विलायतयात्राका निषेध करनेवालोंकी बकबकपर ज़रा भी ध्यान मत दो। पेरिस, बर्लिन, न्यूयार्क, हारवर्ड, लन्दन, टोकियोंमे ज्ञान-गगा बह रही है—उस ज्ञानगगामें स्नान करके अविवेक और सकीर्णतारूपी मैलको धो डालो। घमडी हिन्दू टोकियो या पेरिससे ऑखे बद करके निकल जाते है या वहा ऐशोआरामके अड्डे जमाते है। बहुत हुआ तो हिन्दुस्तानमें ऊँघते ऊँघते कभी कभी रवीद्रनाथ, बसु, रामतीर्थ, विवेकानद आदिकी विद्वत्ता सुनकर अभिमानके मारे नाचते कूदते और फिर ऊँघने लगते है।

हे वीरो! तुम जबानी जमाखर्च छोड़कर कर्मशीलताका पाठ सीखनेके लिये बाहर निकलो—विदेशोंकी हवा खाओ।

दूसरा पत्र ।

यह बड़े संतोषकी बात है कि आजकल जो भारतवासी विदेशोंमें बसे हुए है, उन्होंने भारतमाताकी सेवाके लिये कमर बाँध ली है। हमने पिछले सप्ताह लन्दनमें एक आर्यसमाज स्थापित किया है। वहाँ हिन्दू नवयुवकोंको एक दूसरेसे मिलने जुलनेका अवसर मिला करेगा। इस समाजके स्थापित होनेमें सबसे अधिक सहायता ठाकुर श्रीजसराजसिंह सीसोदियाने दी है। आप महाराणा प्रतापसिंहके, जिन्होंने अपने देशकी रक्षाके लिये जीवन भर कठिनाईयाँ उठाई थी, वंशज है। आप 'राजपूत हेरल्ड' मासिकपत्रके सम्पादक है। यह पत्र प्रतिमास लंदनसे प्रकाशित होता है, प्रत्येक अँगरेजी जाननेवाले भारतीयको यह पत्र मँगाकर पढ़ना चाहिये । उसका पता यह है:—

Editor, *Rajput Herald*
210 High Holborn-London

सम्पादक—**राजपूत-हेरल्ड**
२१० हाई हालबोर्न, **लंदन** ।

जो हिन्दुस्तानी विद्यार्थी आजकल अमेरिकामें शिक्षा पारहे है उन्होंने हालमें 'हिन्दुस्तानी स्टूडेंट' नामका पत्र निकाला है । यह पत्र अच्छे कागज़पर छपता है। इसके लेख भी उत्तम, भावपूर्ण और विद्यार्थियोंके लिये उपयोगी होते है। जो भारतीय विदेश जानेकी इच्छा करें, उनको इस पत्रका ग्राहक अवश्य बनना चाहिये। इस पत्रमें बृटिशराज्यके विरुद्ध एक शब्द भी नहीं छपता है, इस लिये किसी भी राजभक्तको इसके ग्राहक बननेसे न डरना चाहिये। यूरोप और अमेरिकामें इसका वार्षिक चंदा ४) है, परन्तु भारतवर्षके गरीब विद्यार्थियोंको यह सिर्फ १) वार्षिकमें ही

दिया जाता है। आज ही एक रुपयाका मनीआर्डर कर दो, अथवा उसके एजेंट बनकर देशहित कार्यमें सहायता करो। पता—

Publisher, *The Hindustani Student*
P. O. Box 234, Chicago, America.
प्रकाशक, **दि हिन्दुस्तानी स्टूडेंट**
पो० आ० बक्स २३४, **शिकागो, अमेरिका।**

एक और नया पत्र निकला है। इसकी सहायता प्रत्येक भारतीको करना चाहिये। इसका नाम ‘ संसार ’ है। यह गुरुमुखी और अँगरेज़ीमें छपता है। यह पत्र कनेडामें हिन्दुस्तानियोंके लिये बड़ी सरगर्मीसे आन्दोलन करता है। इसका पता यह है—

Editor, The ‘*Samsar*’ 630 Speed Avenue
Victoria B C Canada.
सम्पादक ‘ **ससार** ’ ६३० स्पीड एव्हेन्यू
विक्टोरिया बी. सी **कनेडा**।

मिसर देशके नवयुवकोंने लन्दनसे एक मासिकपत्र “ आफ्रिकन टाइम्स एण्ड ओरिएटल रिव्यू ” निकाला है । इसका वार्षिक मूल्य पाच रुपया है। इसमे भारतवासियोंके विषयमें भी बराबर सिलसिलेवार लेख निकलते है। मै भी इस पत्रमें प्रतिमास लेख लिखा करता हूँ। यह पत्र कुल काली जातियोंके अधिकारोंकी रक्षा करता है और जहाँ कोई जाति काली जातियोंको सतानेका इरादा करती है, उसकी खबर लेता है। ग्राहक बननेके पहले इसका नमूना मँगा लेना चाहिये। पता यह है—

Mr Dost Mohammad, Editor & Publisher
African Times & Oriental Review.
158 Fleet Street London.
सम्पादक और प्रकाशक
आफ्रिकन टाइम्स एण्ड ओरियन्टल रिव्यू
१५८ फ्लीट स्ट्रीट—**लंदन**।

यह बड़े शोककी बात है कि जहाँ भारतवर्षके बाहर भारतीय नव युवक स्वदेश तथा स्वजातिके लिये प्राणपनसे चेष्टा करते है, वहाँ भारतवर्षके नवयुवक सोते पड़े है। शायद वे समझते होंगे कि यह काम बिना किये ही स्वय हो जायगा। एक कविका कथन है कि सोते शेरके मुँहमें हिरण स्वत· ही नही पहुँच जाता है। अतएव हे भाइयो! जागो, होश सँभालो और जातिसेवा करो। मोहनिशामें पडकर कई राष्ट्र नष्ट हो चुके है। प्रसिद्ध तत्त्वज्ञ हक्सलेका कहना है कि, "प्रकृतिके नियम अटल है। यदि तुम यह समझो कि आजके किये अपराधोकी सजा हमको न मिलेगी–तो यह भूल है। प्रकृति तुम्हारे अपराधोंको खूब जानती है। तुम्हें अपने अपराधोंकी सजा अवश्य मिलेगी।" हक्सले नास्तिक था, उसे ईश्वरमें विश्वास न था। फिर भी वह कर्मसिद्धातको मानता था।

भारतवर्षमे देशभक्त लोगोका एक 'साहित्य–समाज' स्थापित होना चाहिये। उसके द्वारा अच्छी अच्छी पुस्तके हिन्दी, उर्दू आदि देशी भाषाओमे अनुवादित की जावे। दस नवयुवक यादि आध घटे काम करें तो एक मासमे अमेरिकाके प्रसिद्ध ऐतिहासिक मोरलेकी प्रसिद्ध पुस्तक हालेडके इतिहासका अनुवाद कर सकते है। बेकन कहता है कि इतिहास हमारे बुद्धिबलको बढ़ाता है। इटली, हालेड और स्विटजरलैंडके इतिहासोंका अनुवाद भारतकी प्रत्येक प्रातिक भाषामें करके भारतवर्षके बच्चो बच्चोंके हाथमें दे देना चाहिये। मोरले साहबका इतिहास इतना रोचक है कि एक बार प्रारभ करके समाप्त किये बिना छोड़ना कठिन काम है। इसके पढ़नेमें उपन्याससे अधिक आनद आता है। हालेंडके निवासी बड़े वीर होते है। दो हज़ार वर्ष पहले जब रूसियोंने हालेंड पर विजय पाई, तब उस समय उन्होंने रूसियोंसे नाकों चने चबवाये थे। पश्चात् फ्रांसने हालेंडपर अधिकार जमाया। परन्तु जिस तरह महाराज शिवाजी तथा रणजीतसिहने मुगल राज्यको

जडसे हिला दिया था, उसी तरह हालेंड निवासियोंने भी फ्रॉसके छक्के छुड़ा दिये थे । उस समय हालेंड-वासियोंकी दशा बहुत शोचनीय हो गई थी। क्योंकि समुद्रकी सतहसे उनके देशकी सतह नीची थी। इस लिये उन्हे रातदिन समुद्रकी लहरोंसे लड़ना पड़ता था । परन्तु अदम्य साहस और पौरुषसे उन्होंने समुद्रको भी अपने वशमें कर लिया। उसके मार्गमें ऐसी विकट रुकावटें खडी कर दीं कि समुद्र उनका सच्चा सहायक हो गया, उनका सेवक बन गया! हालेंडने समुद्रपर विजय पानेके लिए नाविक विद्यामें आश्चर्यजनक उन्नति की। सत्रहवी शताब्दीमें हालेंडका सामुद्रिक बेड़ा यूरोपमें सबसे शक्तिशाली माना जाता था।

यूरोपमे प्रत्येक जाति बारी बारीसे एक एक शताब्दीके लिये बढ़ती चली आई है । सोलहवीं शताब्दीमे स्पेन सबका मुकुटमणि था। सत्रहवीं शताब्दीमे हालेंडका प्रभुत्व बढ़ा। अठारहवीं शताब्दीमें यूरोपीय सभी राष्ट्र फ्रासके सामने सिर झुकाते थे । उन्नीसवीं शताब्दीमें अँगरेज सबसे आगे बाजी मार ले गये। अब बीसवीं शताब्दीमें यूरोपका शिरोमणि कौन बनेगा—यह भविष्यके गर्भमें है।

यदि तुम्हारे हृदयमे देशभक्तिकी अग्नि जल रही है और तुम सचमुचमें देशसेवा करना चाहते हो तो रूसके बादशाह पीटरका जीवनचरित पढो। जब पीटरकी अवस्था चार वर्षकी थी, उस समय उसके पिताका देहान्त हो गया था। बापके मरनेके बाद रूसकी गद्दीपर क्रमक्रमसे उसके चारों सौतेले भाई बैठे, परन्तु वे सब शीघ्र ही मर गये। सत्रहवें वर्षकी अवस्थामें पीटर अपने पैतृक सिहासनका स्वामी बन गया । राजसूत्र हाथमें लेते ही पहले पहले उसने सामुद्रिक-शक्तिको बढाना प्रारंभ किया। क्योंकि वह जानता था कि सामुद्रिक-शक्ति बढ़ाये बिना व्यापारिक उन्नति नही हो सकती है। थोड़े ही वर्षोंके पश्चात् उसने जल-

शक्तिके बढ़ानेमें आशातीत सफलता प्राप्त की। फिर क्या था, उसने सहजही तुर्कोंसे क्रीमिया और उसके समीपवर्ती प्रान्त छीन लिये। पीटरको यद्यपि समुद्रसम्बन्धी कामोंसे रुचि न थी, परन्तु उसने अपने हृदयकी इस कमजोरीपर विजय पाई। उसने अपने महलकी अनेक सुन्दरियोंसे न भरकर केवल एक ही स्त्री पर सन्तोष किया।

अपने देशकी गिरी हुई अवस्थाको देखकर उसे बडा पश्चात्ताप होता था। वह रातादिन यही सोचा करता था कि हमारा देश अन्यदेशोंके समान समृद्धशाली कैसे बनाया जा सकता है। निदान वह देशसेवाके लिये–अपना कर्तव्यपालन करनेके लिये, पच्चीस वर्षकी अवस्थामें अपने राज्यकी बागडोर मन्त्रियोंके हाथमें सोपकर बाहर निकल खड़ा हुआ। वह पहले पहल हालेंड पहुँचा और उसने वहाँ कई वर्षोंतक मजदूरोंकी तरह काम करके नाविक विद्यामें निपुणता प्राप्त की। एक दिन पीटर एक बडी लकडीके उठानेमें अपने साथी मजदूरोंकी सहायता कर रहा था। उसी समय वहासे हालेंडका एक नवाब निकला और उसने पीटरको पहचान लिया।

इसके बाद पीटर इंग्लेंड पहुँचा। वहा उसका अच्छा सन्मान हुआ। वहां रहकर पीटरने सामुद्रिक बेडेकी खूब देख भाल की और तत्संबंधी अनेक बातोंकी जानकारी प्राप्त करके वह अपने देशको लौट आया। स्वदेशमें आकर उसने सैकड़ों सुधार किये और वह जन्मभर अपना कर्तव्य पालन करता रहा। पीटर कहा करता था कि "तुच्छसे तुच्छ कामके करनेमें भी हम न शरमाना चाहिये।"

पीटर अपनी राजधानीको समुद्र किनारे लाना चाहता था, परन्तु यह काम स्विटजरलेंडसे युद्ध किये बिना हो नहीं सकता था। इस लिये उसने स्विटजरलेंडसे युद्ध छेड दिया। परन्तु ८००० स्विज सिपाहियोंने १६००० रूसियोंको बडी बुरी तरहसे हरा दिया। पीटरने हार तो

स्वीकार कर ली, परन्तु हिम्मत न हारी। वह बराबर प्रयत्न करता रहा। नेपोलियन कहा करता था कि बलवान् शत्रुसे लड़ते रहनेसे उसकी बहादुरी हममें आजाती है और हम उसको परास्त कर सकते है। पीटरने युद्ध जारी रक्खा और स्विज़-सेनाको अपने देशमें बढने दिया-यहाँतक कि स्विज़सेनाको वापिस लौटना असाध्य हो गया। मौका पाकर उसने सारी स्विज़सेनाको कैद कर लिया। कैद तो कर लिया, परन्तु उसने उन लोगोका बडा स्वागत किया। वह कहने लगा–' ये मेरे गुरु है, इनका स्वागत करना मेरा धर्म है।" पीटरके ऐसे सद्व्यवहारको देखकर सारी स्विजसेना चकित हो गई, परन्तु उसने बतलाया कि इस युद्धमे विजय पाना हमने तुम्ही लोगोसे सीखा है!

इस तरह विजय पाकर पीटरने अपनी राजधानी समुद्रतटपर बनाना चाही। वहाँपर एक बहुत बडा दलदल था—उसको भरे बिना शहर बसना असभव था। अतएव पीटरने राजाज्ञा प्रकाशित की कि "जितने जहाज इस जगह आवे, सब कुछ न कुछ पत्थर लेते आवें।" देखते देखते वह दलदल पत्थरोसे पाट दिया गया और उसपर एक रमणीक शहर बस गया। इसका नाम सेंटपीटर्सबर्ग (आधुनिक पेट्रोग्राड) रक्खा गया। यह नगर ससारके रमणीक और बडे शहरोमेंसे एक है। पीटर रूसका सबसे बडा राजा ही नही, वरन् सबसे बडा देशभक्त भी था।

प्यारे देशभाइयो! यूरोप वा अमेरिकामे आकर काम करना सीखो, देखो, पीटर राजा था, परन्तु वह हालेडमे रहकर कई वर्षोतक मजदूरोंके साथ काम सीखता रहा। देखो, गत पचास वर्षोसे चीन और जापानसे हजारो युवक यूरोप और अमेरिकाको जाते है और वहाँसे विविध कलायें सीखकर अपने देशको उन्हीं देशोंके मुकाबिले बना रहे हे।

प्यारे भाइयो! वेदों वा उपनिषदोंकी शिक्षा अवश्य ग्रहण करो, परन्तु साथ साथ यूरोप और अमेरिकासे, अपने ब्रह्मविद्यारूपी उद्यानके लिये खाद्यरूपी सायन्सको ले आओ और उसका देशमें प्रचार करो। जब भारतवर्षकी गरीबी दूर हो जावेगी और उसे भरपेट खानेको मिलने लगेगा, तब हम लोग ब्रह्मविद्याके उद्यानसे अमृतमय फल खासकेंगे और तभी हम अपने कर्तव्यसे उऋण होंगे।

तीसरा पत्र।

प्यारे देशभक्त युवको!

मै आजके पत्रमे कुछ ऐसे विलायती सामयिक पत्रो और पुस्तकोका नाम बतलाता हूँ कि जिनके प्रचार और परिशीलनकी भारतमे बडी भारी आवश्यकता है।

इंग्लेंडमे 'क्रय–विक्रय' (खरीद–फरोख्त) नामका एक साप्ताहिक पत्र निकलता है। इसकी ग्राहकसंख्या लाखो है। एक अककी कीमत दो आने है, परन्तु एक पत्र लिख देनेसे यह पत्र दुनियाके किसी भी भागमें १ महीने तक मुफ्त भेजा जाता है। मँगा देखिये, पता यह है—

Publisher, *The Exchange & Mart Bazaar*
Buildings, London

प्रकाशक—**दी एक्सचेंज एण्ड मार्ट बाजार,**
बिल्डिंग्ज–**लंदन**।

इस पत्रको यहाँ ‘ बाज़ार ’ के नामसे पुकारते है। जब किसीको कोई वस्तुका क्रय-विक्रय करना होता है तो वह इस पत्रमे विज्ञापन दे देता है। बारह शब्दोंका विज्ञापन एक बार चार आनेके टिकट भेजनेसे छपता है। दो बारकी इकट्ठी छपाई देनेसे, विज्ञापन तीन बार छप जाता है। विज्ञापन प्राय इस तर्जके छपते है—“मेरे पास अमुक वस्तु है। उसकी अमुक कीमत है। उसकी अब मुझे आवश्यकता नही है। अब मै उसे बेचना या तबदील करना चाहता हूँ।” विज्ञापन छपते ही उसके पास पत्र आने लगते है। सन् १९०९ मे मैने एक हारमोनियम बाजा मोल लिया था। उसका मूल्य ६०) था। अब मै भारत आनेवाला हूँ, इमसे इतनी दूरतक बोझा ले जाना ठीक नही समझता हूँ। इस लिये मैने इसी पत्रमें विज्ञापन दे दिया। विज्ञापनका यह नमूना है—“ मेरे पास एक हारमोनियम बाजा है, सन् १९०९ मे ६०)रु० मे मोल लिया था। अब मै उसे पुस्तकोंसे बदलना चाहता हूँ।” यदि नकद-दामोंमे बेचना चाहता तो शायद १०) भी न आते। विज्ञापन देनेपर मेरे पास ३ दिनके भीतर २४ पत्र आये और आखिर एक सज्जनने ६०) की पुस्तकोसे मेरा बाजा बदल लिया।

ऐसे पत्रोंकी भारतवर्षमे बडी आवश्यकता है। इस पत्रमे विज्ञापनोंके सिवा कुछ नही छपता। परन्तु इसमे हिन्दुस्तानी विज्ञापनोंके समान ‘ मुर्दा जिन्दा हो गया ’ ‘ बूढा जवान हो गया ’ जैसे झूठे और धोखेबाजीके विज्ञापन नही छपते।

इंग्लेंडसे एक और पत्र निकलता है। उसका नाम ‘ बच्चोंका अखबार ’ है। यह हरमहीनेकी पहली तारीखको निकलता है। इसमें बालकोंके लिये सरल शिक्षाप्रद लेख और कवितायें निकला करती है। इसमें रोचक कहानियाँ भी रहती है। इसके चित्र तो बहुत ही सुन्दर और भावपूर्ण होते है। इसमें सायन्सके भी छोटे छोटे लेख छपा करते है।

बालक इसको बड़े चावसे खरीद् कर पढ़ते है। इस पत्रकी सज-धज ऐसी चित्ताकर्षक होती है कि यद्यपि मैं बालक नहीं हूँ, परन्तु तो भी प्रतिमास इसे मँगाकर पढ़ता हूँ। इसकी एक कापी आपको अवश्य मँगाकर देखना चाहिये। तलाश करनेसे रेलवे स्टेशनोंपर इसकी एकाध कापी मिल जायगी। *

लन्दनसे 'स्कूल मास्टर' नामक एक साप्ताहिक पत्र निकलता है। इसके एक अंकका मूल्य एक आना होता है। यह एक बडे महत्त्वका पत्र है। इसमे पाठशालाओका सारा हाल, नई पुस्तकोंके विज्ञापन और शिक्षकोंके जानने योग्य बातें छपती है। शिक्षकोको इससे बडा लाभ पहुँचता है। भारतवर्षमें भी मास्टरोंको यह पत्र पढ़ना चाहिये।

Sir James Yoxal M P.
Editor & Publisher, *School Master*
Keet Street, London

"**सर जेम्स एक्सल** एम पी
सम्पादक और प्रकाशक '**स्कूल-मास्टर**'
कीट स्ट्रीट-**लन्दन**।"

---

* बंगला भाषामे प्राय इसी ढगका एक पत्र निकलता है—उसका नाम 'शिशु' है। इस पत्रमें भी प्राय उपरि लिखित सब गुण पाये जाते है। मूल्य १) है, जो उसकी पृष्ठसख्या, चित्रसंख्या और उपयोगिताके सामने कुछ भी नही है। पता यह है— मैनेजर '**शिशु**' मासिक पत्र
नं ६५।१ बेचू चाटुर्जी-स्ट्रीट, **कलकत्ता**।

हिन्दीमें भी बालकों तथा विद्यार्थियोंके लिये एक दो पत्रोंका निकलना प्रारंभ हुआ है। परन्तु अभी उनमें सुधारणाके लिये बहुत गुँजायश है। ऐसे पत्रोका भारतकी प्रत्येक भाषामें प्रकाशित होना अत्यावश्यक है।—**सम्पादक**।

एक पत्रका हाल और सुनिये। उसका नाम 'स्वास्थ्य और बल' है। इसका विषय नामहीसे प्रकट है। इसमें स्वाथ्य सुधारने और बल बढ़ानेके हेतु उत्तम उनम लेख रहते है। किस प्रकारके मकानोंमें हमको रहना चाहिये, व्यायाम किस तरह करना चाहिये, शरीर रक्षाके लिये स्वास किस तरह लेना चाहिये, कैसा भोजन करना चाहिये, कपडे कैसे पहिनना चाहिये, इत्यादि विषयोंपर इसमें लेख प्रकाशित हुआ करते है। इसमें पहलवानो और सुन्दर रमणियोंके चित्र भी प्रकाशित होते है। भारतीय पहलवान किकरसिह, गामा, गुह आदिके कारनामे भी छपा करते है। नमूना मुफ्त भेजा जाता है। पता यह है—

Publisher-*Health & strength*
12 Burleigh Street Strand, London
प्रकाशक—'**हेल्थ एण्ड स्ट्रैंग्थ**'
नं १२ बरले स्ट्रीट, **स्ट्रेंड, लन्दन**।

भारतवर्षमें सबसे बडी आवश्यकता शिक्षाप्रद व्याख्यानोंके ज़ारी करनेकी है। यूरोपके समान हमको भी अच्छे अच्छे व्याख्यानदाताओंकी आवश्यकता है। परन्तु हम यूरोप तथा अमेरिकाकी अपेक्षा निर्धन है—इस लिये चन्दा बहुत ही थोड़ा रखना चाहिये। आजकल फ्रांसके गिरजाघरो घटाघरों तथा पूजा करनेके स्थानोंमें भी शिक्षा दी जाती है। गिरजाघर विद्यालयोंके रूपमे परिणत कर दिये गये है। तुम्हारे भी लाखों मन्दिर है—जिनमें पुजारीलोग कुकर्म किया करते हैं। भारतवर्षके नवयुवको! *यादि तुम्हें अपने देशसे प्रेम है, तो इन मन्दिरोको विद्यालय बना डालो।* हर एक मन्दिरमें प्रति रविवार या किसी भी एक नियत दिनको व्याख्यान दिये जाना चाहिये। कैसे विषयोंपर व्याख्यान दिये जाना चाहिये? उदाहरणार्थ कुछ विषय नीचे दिये जाते है.—

(१) Cosmology.	(सृष्टिविद्या)–ससारकी बनावट, चन्द्रमा और तारागणोके बननेका हाल, यह पृथ्वी किस वस्तुसे बनी है और इस स्थितिमें कबतक रहेगी ।
(२) Biology.	(जीवन विद्या)–प्राणियोंका आरभ और उनकी बनावट, विकास-सिद्धान्त क्या है, डारबिन और हक्सलेके क्या सिद्धान्त थे ।
(३) Anthropology.	मनुष्य किस प्रकार उत्पन्न हुआ ।
(४) Psychology.	मनोविज्ञान, आत्मिकविद्या, आत्माके विषयमें आजकलके सायन्सवालोके क्या सिद्धान्त है ।
(५) History	मनुष्यजातिका विकाश, राष्ट्रसंगठन, राष्ट्रोंका उत्थान और पतन, फ्रास तथा अमेरिकामे प्रजासत्तात्मक राज्यकी स्थापना कब और किस तरह हुई । भारतवर्षको मुसलमान या ईसाइयोने कैसे विजय किया ।
(६) Politics.	राजनीति ।
(७) Economics.	(सम्पत्तिशास्त्र)–राष्ट्रके धनका सदुपयोग ।
(८) Eugenics	(सन्तानशास्त्र) राष्ट्रमे बलिष्ठ, स्वस्थ, सुन्दर, वीर और बुद्धिमान् बालक कैसे उत्पन्न किये जा सकते हैं ।

(९) Socialism (समाज-शास्त्र) अमीर गरीबमें बराबरीका संबंध किस तरह बढ़ाया जा सकता है।

इन विषयोंपर बड़ी धूमधामके साथ व्याख्यान होना चाहिये। आज भारतवर्षकी औसत आमदनी दुनियाँ भरके सब देशोंसे कम है। ऐसी अवस्थामें यदि तुम अपने ऐशोआरामके लिये अधिक रुपया खर्च करते हो, तो तुम अपने स्वार्थके लिये हजारों नहीं, लाखों ग़रीबोंको भूखों मारते हो। तुम इनके भागोंको—इनके अधिकारोंको हडप करते हो। अपने देशबन्धुओंके अधिकारोंको पददलित न होने देना—यह तुम्हारा कर्तव्य-कर्म होना चाहिये। जिनका रुपया खर्च करके तुम जीते हो, शिक्षा पाते हो—उनको भी शिक्षा दो। मन्दिरोंमें, मसजिदोंमें, समाजोंमें घंटे बजानेसे क्या होगा, जब तुम उन जीवित देवताओंका निरादर करते हो, जो तुम्हारे देशबन्धु है और तुम्हारे आसपास रहते है। हे युवको! तुम उन जीवित देवताओंकी सेवा करो, उनके कष्टों तथा अभावोंको दूर करो और उन्हें शिक्षाके सुन्दर प्रकाशमें पहुँचाओ। हिन्दूधर्म कहता है कि शिक्षासे बढ़कर कोई दान नही। यदि तुम आज किसीको रोटी खिला दो तो वह कल फिर भूखा हो जावेगा, परन्तु विद्या एक ऐसी वस्तु है कि न उसको चोर चुरा सकते है, न कीड़े खा सकते है, प्रत्युत ज्यों ज्यों उसका उपयोग किया जाता है, त्यों त्यों वह बढ़ती जाती है। अतएव तुम भारतके बच्चे बच्चेको शिक्षा दो। यदि तुम लोगोंको शिक्षित बना देओगे तो फिर वे रोटी कपड़ा तो स्वयं कमा लेवेंगे। तुम एक बार जापानकी ओर दृष्टि फेंको। देखो, शिक्षाने पचास वर्षोंमें उसे क्यासे क्या बना दिया। यह वही जापान है, जिसको तुम्हारे बाप दादाओंने बौद्धधर्मकी शिक्षा दी थी। यदि तुम आज भी जापान जाओ तो संस्कृत भाषामें उपनिषदोंके वचन

उनके मन्दिरोंमें लिखे पाओगे । जाओ, मेरे प्यारे मित्रो ! जापान, अमेरिका, इटली, फ्रांस, स्विटज़रलैंडकी यात्रा करो और वहाँ जाकर इस बातकी खोज करो कि उन्होंने अपने देशोंकी यह आश्चर्यजनक उन्नति कैसे की है ।

आजकल विलायतमें 'पीपुल्स बुक्स' (People's Books) नामक पुस्तकोंका सिलसिला निकला है । ये पुस्तकें छह छह आनामे मिलती है । सस्ती होनेके सबब इनको ग़रीबसे गरीब आदमी भी ले सकते है । भाषा ऐसी सहज होती है कि सब लोग समझ सकते है, उनमे विद्वत्ता नहीं दिखाई जाती । प्राय सब पुस्तकें ९०—९० पृष्ठकी होती है । यूरोप और अमेरिकाके बड़े बडे विद्वान् इन पुस्तकोंको लिखते है । इन पुस्तकोको तुम बड़ी खुशीसे थोड़े समयमें पढ सकते हो और उन्हीं विषयोपर व्याख्यान दे सकते हो । इतनी पुस्तकें छप चुकी है—

(१) पृथ्वी कबसे बनी, (२) जीवनका आस्तित्व कबसे हुआ, (३) पशु-जीवन, (४) उद्भिज विद्या, (५) हक्सलेका जीवन-चरित, (६) बौद्ध धर्म, (७) सामुद्रिक शास्त्र, (८) तत्त्वज्ञान, (९) सचाईसे लाभ, (१०) डार्विनका जीवनचरित, (११) नक्षत्र और ग्रहशास्त्र, (१२) अच्छे बालक कैसे उत्पन्न किये जा सकते है, (१३) दान, (१४) बलिष्ठ तथा वीरबालक पैदा करना, (१५) ऋतु-शास्त्र, (१६) हिप्नाटिजम और मैस्मेरेज़म, (१७) विद्युत, (१८) प्रकाश, (१९) स्वतंत्रताका आरभ और उसका विकास, (२०) स्त्रियोंकी स्वतंत्रता, (२१) अँगरेजी राज्यके मूल सिद्धान्त, (२२) धनोपार्जनविद्या, (२३) वेलिंगटनने वाटर्लूपर किस प्रकार विजय प्राप्त की, (२४) दैनिक जीवनके नियम, (२५) शैलेका जीवनचरित, (२६) शेक्सपियरका जीवनचरित, (२७) ग्रीसका इतिहास, (२८) राजकुमार विस्मार्कका वृतान्त, (२९) मकान

बनानेकी विद्या, (३०) नैल्सनका जीवनचरित, (३१) प्लेटोकी शिक्षा, (३२) नीति क्या है ?, (३३) चीरफाड, (३४) काम-वेलकी जीवनी, (३५) बाग लगानेकी विद्या, (३६) ओषधि और घरका डाक्टर, (३७) संसारका इतिहास इत्यादि। ऐसी ही १५० पुस्तकें सुन्दर टाइपमें अच्छे काग़ज़पर छप चुकी हैं। सभी समाचार-पत्रोंने इनकी मुक्तकठसे प्रशंसा की है। जो मनुष्य इन पुस्तकोंको पढ़ेगा और मनन करेगा उसका ससारकी प्रायः सभी विद्याओंमें थोडा बहुत दख़ल (प्रवेश) हो जायगा। आज ही एक पत्र डालकर सूचीपत्र मंगा-इये। पता यह है—

T. C. & E C. Jack
67 Longacre, London W C.
"टी सी एंड इ. सी. जेक
६७ लॉंगएकर—**लंदन**, डब्ल्यू सी"

मेरे निर्धन और प्यारे भाइयो! जिस प्रकार तुमसे हो सके विद्याका प्रचार करो। गलियोंमें जाकर निर्धनोंके लड़कोंको जो तुम्हे धूलमें खेलते मिलेंगे अपने कमरेमे उठा लाओ और उन्हें पढना लिखना सिखाओ। भगी, चमार किसीसे भी द्वेष मत रक्खो। भगवद्गीतामें भगवान् श्रीकृष्ण कहते है—"कोई मनुष्य अपने पेशेसे ऊँचा या नीचा नही हो सकता है।" यदि एक मोची ईमानदारीसे जूता बनाता है, तो वह उस प्रोफेसरसे अच्छा है, जो दिन भर व्यर्थ बकबक किया करता है। यदि मोची न हो तो तुम्हें नंगेपैरों फिरना पड़े। यदि भगी न हो तो गन्दगीसे तुम्हारा सारा शहर बीमार हो जावे। इस लिये मै तो इन भगी चमारोंकी इज्जत करना अपना धर्म समझता हूँ। तुम भी इनसे प्रेम करो और इनपर विद्याका प्रकाश डालो। इनके सामने साइंस, इतिहास, राजनीति, सम्पत्ति-

शास्त्रपर व्याख्यान देओ। यह कैसे अफसोसकी बात है कि जब ये हीं भंगी चमार हिन्दूधर्मको त्यागकर ईसाई हो जाते है, तब तुम उनकी प्रतिष्ठा करने लगते हो, उनसे हाथ मिलाते हो और बराबरीपर बिठलाते हो। परन्तु जब तक वे हिन्दू रहते है, तुम्हारी सेवा करते है, तबतक तुम उन्हें ठोकरें लगाते हो—कुत्तेबिल्लीसे बदतर समझते हो। प्यारे भाइयो! यह कहाँका न्याय है? यह कहाँकी बुद्धिमानी है?

अच्छी अच्छी पुस्तकोंका देशीभाषाओं और विशेषकर राष्ट्रभाषा हिन्दीमें अनुवाद करो। दूसरोंकी भाषायें पढकर कभी कोई राष्ट्र नही बना है। शिक्षा सदैव अपनी ही भाषामें होना चाहिये। देखो, बंगालियोंने अपनी मातृभाषाकी कैसी उन्नति की है!

भारतके नवयुवको! तुम इस विषयमें बंगाली भाइयोंसे शिक्षा ग्रहण करो। आज ही मिलकर साहित्यसभा सङ्गठित करो। इसमे सब लोग जो भारतवर्षकी सेवा करना चाहे—शामिल रहें। थोडे ही समयमें इस सभाको लाखो भक्त और काम करनेवाले मिल जावेंगे। परन्तु शर्त इतनी है कि यह काम निःस्वार्थ और सच्चे देशप्रेमसे प्रेरित होकर किया जावे। अन्यथा कुछ न होगा। नेता (लीडर) बननेकी धुनको छोड़ देना चाहिये। क्योंकि इससे सब बना बनाया काम बिगड जाता है। सच्चा नेता वही है जो सबका सेवक है।

प्यारे भाइयो! अपने देशमे ऐसा पवित्र और धार्मिक जीवन व्यतीत करो, जिससे तुम्हारे देशका हित साधन हो और विदेशोंमें उसका गौरव बढ़े—साथ ही तुम्हारे आदर्शजीवनसे इस देशवाले अमली शिक्षा ग्रहण कर सुखी जीवन बनानेमें समर्थ हो सकें।

चौथा पत्र।

कुछ वर्ष हुए यहाँके एक अँगरेज़ लेखक सर फ्रांसिस गल्टनने यूरोपमें एक नये आन्दोलनको उठाया था, जो अब उत्तरोत्तर बढ़ता चला जा रहा है। प्रत्येक शिक्षित पुरुषको इस ओर ध्यान देना चाहिये। उक्त लेखकका कथन है कि जिस तरह जानवरोंके जोड़े मिलाते समय मनुष्य बड़ी सावधानीसे काम लिया करते है, उसी तरह बल्कि उससे भी अधिक ध्यान मनुष्योंके विवाहके सम्बन्धमे देना चाहिये। बे-जोड विवाह होनेसे बहुत हानि होती है। क्योंकि विवाहका मुख्य उद्देश्य सतानोत्पत्ति ही है और उत्तम सन्तानोत्पत्ति बलिष्ठ, नीरोग और सच्चरित्र मातापिताके बिना हो ही नहीं सकती। इस लिये विवाहके पूर्व वर-कन्याका जोड़ चुनते समय बड़ी सावधानीसे काम लेना उचित है। क्योंकि आज जो बच्चे उत्पन्न होंगे, कल वही जातिके स्तभ बनेंगे। अँगरेजोंमें एक कहावत प्रसिद्ध है कि—'आजके बालक, कलके राष्ट्र।'

गत शताब्दीमें चार्लस डार्विनने जो इंग्लेंडका सबसे बड़ा फिलासफर था, Origin of Species या 'नस्लोंका आदि कारण' नाम्नी एक पुस्तक लिखी थी। इसमें उसने सिद्ध किया है कि 'आज हम संसारमें जितने भिन्न भिन्न जड-चेतन पदार्थ देखते है वे एकदम ससारमें नहीं आये—उनका विकास धीरे धीरे हुआ है। उसका कथन है कि प्रथम यह पृथ्वी सूर्यका एक भाग थी और सब तारागण भी सूर्यके ही अन्तर्गत थे। किसी कारण सूर्यको एक ऐसा धक्का पहुँचा कि उसके बहुतसे अंश इधर उधर जा गिरे। पहले तो वे अंश बहुत गरम और पिघले हुए थे, परन्तु जैसे जैसे वे ठंडे होते गये वैसे वैसे उनमें दृढ अवस्था आती गई। उन्हीं सूर्य अंशोंमेंसे एक अंश यह पृथ्वी है और

शेष अंश हम लोगोंको तारागणोंके रूपमें दिखाई देते है । वास्तवमें वे हमारी ही पृथ्वीके समान हैं । जब यह पृथ्वी बाहरसे ठंडी हो गई तब इसकी सतह ठौस हो चली, परन्तु उस समय भी वह भीतर गरम और पिघले लोहेके समान मुलायम थी । कभी कभी भीतरकी गरमी बाहर निकलनेसे पृथ्वीपर पहाड़ और गड्ढे बन गये । धीरे धीरे वह ठंडी होती गई और उसमें लाखों वर्षोंतक इसी तरह परिवर्तन होता गया । फिर उसमें कीचड़ आदिके मेलसे एक जीव जिसको 'प्रोटोप्लाज्म' कहते है उत्पन्न हुआ । यह एक अत्यंत सूक्ष्म जीव है जिसे हम खुर्दबीनके बिना देख नही सकते । इसके हाथ, पैर, कान आदि कोई अंग नहीं होते । यह आसपासके द्रव्योंको खींचकर अपना जीवन स्थिर रखता है । जब यह बडा हो जाता है तब दो टुकड़ोंमे कट जाता है । इस तरह यह विचित्र प्राणी कटनेसे एकसे दो, दोसे चार और चारसे आठ संख्यामें हो जाता है । इसमें स्त्री पुरुषका कोई भेद नही रहता ।

डार्विनका यह दावा है कि संसारमें जितने प्राणी दिखाई देते है वे सब इसी प्रोटोप्लाज्मसे विकास पाते पाते वर्तमान स्थितिको पहुँचे है । उन्नति करते करते लाखो वर्षमें प्रोटोप्लाज्मसे मछली, मछलीसे रेंगनेवाले जानवर, रेंगनेवालोंसे पक्षी, पक्षियोंसे बन्दर और बन्दरोंसे मनुष्य बने है ।

जब प्रोटोप्लाज्म बढकर संसारमें फैल गये तब उनकी आपसकी लड़ाई Struggle for Existence (जिन्दगीके लिये जद्दोजहद) शुरू हुई । वे एक दूसरेको मारकर उन्नति करने लगे । उनमें जो सबल थे वे जीवित रहे और जो निर्बल थे वे मारे गये । डार्विनके इसी सिद्धान्तको Survival of the fittest अर्थात् ' जिसकी लाठी उसकी भैस ' कहते है । इस तरह संसारमें प्रोटोप्लाज्मकी संतति फैल गई । इनकी जो संतति उत्पन्न होती थी वह कोई तो अपने मा बापसे श्रेष्ठ और कोई हीन

होती थी। जो श्रेष्ठ थे वे हीनोंपर बाजी मार ले गये और उन्होंने कमजोरोंका नामशेष कर दिया। प्रकृतिका नियम है कि कमज़ोर और निकम्मे जीवित नहीं रह सकते। धीरे धीरे इसी तरह विकास होता गया।

मनुष्य भी आपसमें लड़ा करते है। जो जातियाँ बलमें, विद्यामें, हुनरमें बढ़ी चढ़ी होती हैं वे अपनेसे निर्बलोंका नाश कर देती है। जब गोरे लोग आस्ट्रेलिया पहुँचे तब उन्होंने वहाँपर एक कालीजाति आबाद पाई। उसको मारकर, ये लोग वहीं बस गये।

अठारहवीं शताब्दीमें फरासीसी फिलासफ़र रैलमार्कने एक पुस्तक लिखी थी। उसमें उसने बतलाया है कि हमारे अग और अवयव हमारी आवश्यकताओंको पूरी करनेके लिये इस स्थितिमें पहुँचे है। जो मनुष्य लुहारका काम करता है उसका हाथ हथौडेके व्यवहारसे बहुत बलिष्ठ हो जाता है। अतएव जो पक्षी अपनी गर्दनको आगे बढाकर मछली पकडनेका प्रयत्न करते थे उनकी गर्दन बड़ी हो गई। जो प्राणी अशक्त या निर्बल थे उन्होंने भागकर अपनी जान बचाई, इसलिए उनकी टाँगें दृढ हो गई—जैसे खरगोश।

जब बालक माताके पेटमे रहता है तब वह अपनी माताके रहन सहन और चाल ढाल परसे बहुत कुछ नया जीवन प्राप्त कर लेता है। इस लिये कई अंशोंमे बालक अपने माबापके अनुरूप होता है। डार्विन इन विषयोंका अध्ययन करके इस सिद्धान्तपर पहुँचा कि मनुष्य विकास करते करते प्रोटोप्लाज्मसे इस स्थितिमें पहुँचा है। यदि यह प्रश्न उठाया जाय कि उनमें बुद्धि कहाँसे आई तो इसका उत्तर 'जीवनके लिये युद्ध' है। जो प्राणी सदा बलसे काम लेना चाहते थे वे मनुष्यसे अधिक बलवान्—रीछ, शेर, भेड़िये आदि हुए। जो प्राणी रातको अपना भोजन तलाश किया करते थे उनको रातको अधिक दिखाई देने लगा—जैसे उल्लू, बिल्ली, शेर आदि। इसी तरह वे जातियाँ जो तत्त्वज्ञानके

अन्वेषणमें तत्पर रहती थीं, तत्त्वज्ञानमें सबसे आगे निकल गईं—जैसे कि हिन्दू ।

इसी सिद्धान्तके अनुसार सर फ्रान्सिस गल्टन कहते है कि सुन्दर, बलवान्, तथा चपल स्त्रियोंका विवाह उन्हींके अनुरूप पुरुषोंके साथ करना चाहिए । क्योंकि उनसे बच्चे भी वैसे ही होंगे । जो लोग निर्बल, आलसी, अकर्मण्य, बीमार तथा मूर्ख हैं उनका विवाह ही न होने देना चाहिये । यदि विवाह हो भी जावे तो उनसे सन्तानोत्पत्ति न होना चाहिए । क्योंकि ऐसे मातापितासे उत्पन्न हुई निर्बल सन्तान राष्ट्रोन्नतिमें बाधक होती है । इस विषयपर दो उत्तम पुस्तकें लिखीं गई है—(1) Modern Utopia, by H. G. Well (2) Human faculty and its development, by Sir F. Galton. दोनोंका मूल्य बारह बारह आने हैं । जो लोग मगाना चाहे किसी भी पुस्तक-प्रकाशकसे मँगा सकते है ।

गल्टनके शिष्यका मत है कि युद्ध होना ही न चाहिये, क्योंकि युद्धमें राष्ट्रके बलवान् लोग नष्ट हो जाते है और कमज़ोर बाकी रह जाते है, जिनके वंशज और भी कमज़ोर होते जाते है और इस तरह राष्ट्रोंका अधःपतन हो जाता है ।

गल्टन साहब कहते है कि जिस जातिमें बुद्धिमान् तथा शक्तिमान् लोगोंकी अधिकता होगी वह दूसरे देशोंपर अवश्य विजय प्राप्त करेगी । गल्टन और उनके शिष्योंका यूरोपपर बड़ा प्रभाव पड़ा । इसी कारण वहाँ Eugenics या संतानशास्त्रका बड़ा महत्त्व है, उत्तम सन्तान पैदा करनेके लिये बड़ा ज़ोर दिया जाता है । अतएव जो लोग पागल, अशक्त, अपव्ययी या मूर्ख है, अथवा जिनको प्रमेह, गर्मी, या क्षयरोग है, उन्हें सन्तानोत्पत्तिका अवसर ही न दिया जाना चाहिये । क्योंकि उनसे केवल उनकी सन्तानको ही आजन्म कष्ट नही भोगना पड़ता है, परन्तु

सारे देशको भी भारी हानि पहुँचती है। उनके लिये जरूरतसे अधिक अस्पताल और पागलखाने खोलना पड़ते हैं। इस लिये उन्होंने यह युक्ति सोची है कि ऐसे लोगोंकी बस्ती अलग बसाई जावे और उनको शेष लोगोंसे मिलने जुलनेका अवसर न दिया जावे।

अमेरिकामें हालमें एक ऐसे कानून पास होनेकी चेष्टा की जा रही है कि जो पुरुष (उर्पयुक्त कारणोंसे) विवाहके अयोग्य ठहराये जावें उनपर ऐसा आपरेशन कर दिया जाय कि जिससे वे स्त्रीसहवास तो कर सकें, पर सन्तानोत्पत्ति न कर सकें। स्विटजरलेंडमें यह कानून है कि जब तक डाक्टर यह तसदीक न कर दे कि यह बलिष्ठ और नीरोग संतानोत्पादक करनेके योग्य है तब तक कोई स्त्री पुरुष विवाह नही कर सकता।

सरकारी रिपोर्टोंसे जाना जाता है कि आजकल इग्लेंडमें एक अमीरके औसत दर्जे ४ और ग़रीबके ६ बच्चे पैदा होते हैं। यदि संतानोत्पत्तिका यही क्रम जारी रहा तो कुछ समयके बाद वहाँ निर्धनोंकी सख्या बहुत बढ़ जावेगी। आक्सफोर्ड विश्वविद्यालयके प्रोफेसर मि. शास्ट्रर इसी बातका विवेचन करते हुए कहते है कि ऐसी उत्पत्तिसे अँगरेज़ जातिको बड़ा धक्का लगेगा।

हमारे भारतवर्षका भी हाल सुनिये। सरकारी रिपोर्टोंसे पता लगता है कि इस देशमें मुसलमानों और ईसाइयोंकी संख्या बढती जाती है और हिन्दू दिनपर दिन घट रहे है। हमारे विचारमें इसके कई कारण है। बालविवाहसे जो बालक पैदा होते हैं, शक्तिहीन होनेके कारण उनमेंसे अधिकाश युवा होनेके पहले ही मर जाते है। हिन्दू लोग मूर्खतावश विवाहमें रुपया भी बहुत खर्च करते है, अतएव निर्धनताके कारण कई मनुष्य अपना विवाह नही कर सकते है। लाखों विधवाओंकी अवस्था व्यर्थ नष्ट हो रही है—उनको विवाहकी आज्ञा नहीं दी जाती। नहीं तो वे राष्ट्रके लिये लाखों बच्चे दे सकती हैं। छूतछातकी

रस्मके कारण हिन्दू लोग नगरोंमें ताजा भोजन न करके, तेलकी पकी हुई मैली कुचैली पूड़ियाँ जिनका हजम करना कठिन होता है, खाकर स्वास्थ्यको नष्ट करते हैं। मातायें अशिक्षित होनेके कारण जातिसेवाके लिये योग्य सन्तान तैयार नहीं कर सकती। प्लेग और हैजा उनकी मालिनताके कारण प्रतिवर्ष लाखों हिन्दुओंका नाश करते हैं। लडकोंके स्वास्थ्य और चालचलन सुधारनेके लिये स्कूलों तथा कालेजोमें कोई प्रबंध नहीं है। प्राचीन समयमें भारतवर्षकी स्त्रियोको शिक्षा दी जाती थी। वे आज कलके समान मूर्ख न रक्खी जाती थी। उनका विवाह भी योग्य पात्रोंके साथ वयःप्राप्त होनेपर किया जाता था—अत एव उनकी सन्तान भी योग्य पैदा होती थी। वे स्त्रियाँ ही राम, कृष्ण, हनुमान, भीष्म, अर्जुन, भीमसेन जैसे वीर और प्रतिभावान् बालकोंको पैदा कर सकती थी। प्राचीन समयमें जहाँ स्त्रियोंका आदर सन्मान किया जाता था, वहाँ अब वे पाँवकी जूती कही जाती है। यदि तुम चाहते हो कि भारतवर्षमें फिरसे पृथ्वीराज, शिवाजी और महाराणा प्रतापसिंहके समान सूरमा पैदा हों तो अपनी स्त्रियोको ऐसे सूरमाओंकी माता बननेके योग्य बनाओ। सारे यूरोपमें केवल एक 'ज़ान आफ़ आर्क' ही पैदा हुई, परन्तु भारतवर्षके इतिहासमें ऐसी देवियोंकी गिनती नहीं हो सकती। फिर कोई कारण नही कि आजकल ऐसी स्त्रियाँ पैदा न हों।

इस पत्रके अंतमें मै यह कह देना चाहता हूँ कि यदि हिन्दू अब भी सचेत न होंगे—समयकी आवश्यकताओंके अनुसार अपने जीवनको परिवर्तित न करेगे तो भारतवर्षमे पचास वर्षके भीतर मुसलमानों और ईसाइयोंकी सख्या बराबर हो जावेगी और अगले पचास वर्षोंमे उनकी संख्या हम लोगोंसे बहुत बढ़ जावेगी। इस अधोगतिके समयमें हिन्दूसभ्यता, हिन्दू आचार और हिन्दू जातिकी क्या दशा होगी उसका लिखना शोकाग्निमें जलानेवाला है।

हे परमात्मा ! हिन्दूराष्ट्रको जगा और उसके युवकोंको ऐसी शक्ति प्रदान कर कि जिससे वे उस देशकी सेवा करनेके योग्य हो जावें जिसमें राम, कृष्ण और बुद्धने जन्म लिया था ।

पाँचवाँ पत्र ।

हिन्दू विश्वविद्यालय ।

लन्दनमें कई ऐसे विद्यार्थी है कि जिनकी रायसे हिन्दू विश्वविद्यालय बनाना एक बेहूदा कार्य है । देशमे पॉच विश्वविद्यालय पहले हीसे कायम है, फिर अब रुपया खराब करके एक नया विश्वविद्यालय स्थापित करनसे क्या लाभ ? हॉ, यदि विश्वविद्यालय बनाना ही है तो राष्ट्रीय विश्वविद्यालय बनाया जावे, जिसमे जाति, पॉत, धर्म आदिका कोई झगड़ा न रक्खा जावे—जिसे प्रत्येक हिन्दुस्तानी अपनी राष्ट्रीय सम्पत्ति कह सके ।

भारतीय किसान ।

भारतवर्षमें वकील, महाजन, तहसीलदार और अफ़सर लोग तो केवल रुपया कमाना जानते है । यदि वास्तवमे पूछा जाय तो रुपया पैदा करनेवाले भारतीय किसान ही है । वे बेचारे सवेरेसे शामतक खेतोंपर पसीना बहाकर काम किया करते है और उनके ऐसे दृढ़ परिश्रमसे जो रुपया पैदा होता है, उसे वकील, बैरिस्टर, महाजन और जमीनके मालिक उड़ा जाते है । बेचारे किसान तो भूखों मरते हैं ! यदि तुम्हें अपने देशसे कुछ भी प्रेम है, तो कांग्रेस और सभाओंमें मौखिक वक्तृता देनेकी अपेक्षा

देहातमें जाकर किसानोंको पढ़ना लिखना सिखाओ और उन्हें बत-लाओ कि तुम्हारे अधिकार क्या हैं। यदि आज किसान लोग अनाज पैदा करना छोड दे, तो वकील, बैरिस्टर, महाजन, अफसर आदि सब भूखों मर जावें। बड़े शर्मकी बात है कि हमारे देशवासी इन्ही किसानों-को नीच और गवॉर समझते हैं ! बातें बनाना बड़ा सहज काम है। मै सच कहता हूँ, अगर सब किसान सन्यासी बन जावें, तो सारी दुनियॉ भूखों मर जावे।

साधुओं तथा स्वामियोंको चाहिये कि वे अमीरोंके तलवे चाटकर अपने महान् पदको लज्जित न करें। अमीरोंका साथ छोड गरीबों और अनाथोंकी सेवा करें। हम लोग कालेजों और स्कूलोंमें पढते है और ये कालेज या स्कूल किसानोंके रुपयोंसे बने है। किसान रातदिन परि-श्रम करके रूखी सूखी रोटी खाकर अपना निर्वाह करते है और हम उनके रुपयोंसे लाभ उठाते है। इस लिये हमारा कर्तव्य है कि हम उनको विद्या देकर उनके ऋणसे उऋण होनेका प्रयत्न करें।

देशी रजवाड़े।

कई लोग रातदिन 'स्वराज्य स्वराज्य' चिल्लाया करते है। परन्तु वे असली बातको उसी रंगमें देखनेकी योग्यता नहीं रखते। यदि तुम जातिकी सेवा करना चाहते हो तो देशी रियासतोंमें जाकर शिक्षाका प्रचार करो। देशी रजवाडोंमें तो स्वराज्य कायम है–फिर वहॉ जाकर व्यायाम–शाला, जातीय स्कूल, ॲगरेजी ढँगपर समाचारपत्र चलाना जारी क्यों नहीं करते ? उनसे लाखो रुपया दान मॉगनेमें तो तुम्हें शरम नही आती, परन्तु वहां जाकर काम करनेमें क्यों शरमाते हो ? यदि देशी राज्योंमें अत्याचार होता है और वहॉ ॲधेर नगरी है तो तुम वहॉ विद्याका प्रकाश क्यों नहीं फैलाते ? लोगोंको धर्म, स्वतन्त्रता और जागृतिके गीत क्यों नहीं सुनाते ? रूसकी ओर देखो, कुछ समय हुआ

वहाँके एक अमीरकी बेटी जो एक अमीरकी स्त्री थी अपने घर द्वारको छोड़कर देहातमें किसानोंको शिक्षा देनेके लिए अपना जीवन समर्पण कर चुकी है । भारतवर्षके लिये ऐसे ही स्वयंसेवकोंकी आवश्यकता है ।

धार्मिक झगड़े ।

अब धार्मिक कलहको छोड़कर सामाजिक मामलोंमें सम्मिलित होना सीखो । जापान, यूरोप और अमेरिकामें सब सामाजिक प्रथायें देशके एक छोरसे दूसरे छोर तक प्राय· एकसी मिलती है । परन्तु भारतवर्षका नकशा ही निराला है। लन्दनसे 'स्वतत्रता' नामका एक मासिकपत्र निकलता है । उसमे प्रतिमास सामाजिक मामलोंपर बड़े मार्केके लेख निकला करते है । इस पत्रका वार्षिक मूल्य डॉकखर्चसाहित एक रुपया है । मँगानेपर नमूनेका अंक मुफ्त मिलता है । पता यह है--

Freedom, ***Press***, 127, Assulton Street,
London N. W

फ्रीडम प्रेस, १२७ एसलटन स्ट्रीट,
लन्दन--एन. डल्यू

घरू धार्मिक झगडोको छोड़कर अपने प्रचारक यूरोप और अमेरिकाको भेजो जो वहा जाकर वहाके गोरोंको हिन्दू बनावें । आजकल पश्चिमी देशोंके लोग हिन्दू-तत्त्वज्ञानपर बड़ी श्रद्धा रखते है । यदि हिन्दू उपदेशक जर्मनी, इटली, स्विटजरलेंड, फास, नारवे, इग्लेंड आदि यूरोपीय देशोंको भेजे जावें तो दश वर्षके भीतर यूरोपकी एक काफी संख्या हिन्दू बन जावेगी । और जब वे हिन्दू बन जावेंगे तो उनसे हमको बहुत सहायता मिलेगी । मुझसे लेडी लम्ब महाशया बहुधा कहा करती है कि " हिन्दू प्रचारकोंको विलायत बुलाकर यहाँ हिन्दूधर्मका प्रचार कराओ । " मुझे और भी कई कुलीन अँगरेजोंने विश्वास दिलाया है कि यदि हिन्दू उपदेशक यहाँके लोगोंको धर्मामृत पान करावें तो लन्दनमें

लाखों हिन्दू हो जावेंगे । बौद्ध और जैनधर्म यहाँपर अपना प्रभाव जमा रहे है । हे हिन्दुओ ! तुम कबतक सोते रहोगे ? भारतीय धर्म-प्रचारकोंको यहाँ भेजो जो धार्मिक प्रेमके साथ साथ राष्ट्रीयलाभके लिये यहाँवालोंको अपनी ओर खींचकर भारतके शुभचिंतक बनावें । विलायतमें भारतीय धर्मोंका जो थोड़ा बहुत प्रचार हुआ है उसमें भारतीयोंका बहुत ही कम हाथ है । कांग्रेसमें बैठकर अँगरेज़ोंको चिढ़ानेकी अपेक्षा उन्हें हिन्दू बनाना अच्छा है । देहलीके पादरी एन्ड्रूज साहबने पश्चिममें जो व्याख्यान दिये है उनसे पता लगता है कि वे बहुत शीघ्र हिन्दू हो जावेंगे ।

कुछ लाभदायक पुस्तकें ।

कुछ वर्ष हुए डिग्बी नामक एक अँगरेज़ सज्जनने, जो कई वर्षोंतक भारतवर्षमें रह चुके है Prosprous India नामकी एक पुस्तक लिखी है । इस पुस्तकका अनुवाद मुन्शी गुलामकादरने स्यालकोटसे उर्दूमें प्रकाशित किया है । हावरन् सा० ने भारतवर्षके विषयमें एक पुस्तक लिखी है । आप इस देशमें बहुत समय तक (आई सी एस) सिविलियन रह चुके है । यह पुस्तक उन्होंने अपने अनुभवपर लिखी है । इस पुस्तकके सम्बन्धमें मेरे मित्र सर वेडरवर्नने एक समालोचनात्मक लेख ‘ नेशन ’ में प्रकाशित किया है । वह लेख पढ़ने योग्य है–उसे एक बार अवश्य पढो ।

कुछ वर्ष हुए Hindu Superiority नामकी एक पुस्तक राजपूत प्रिन्टिंग वर्कस् अजमेरसे प्रकाशित हुई थी । इसके लेखकने, जो एक योग्य पुरुष मालूम पड़ते है, इस पुस्तकमें सिद्ध किया है कि हिन्दू सारी कौमोंसे श्रेष्ठ है । विलायतमें इस पुस्तकका अच्छा मान है । इस पुस्तकका अनुवाद हिन्दी और उर्दूमें होना चाहिये ।

छठा पत्र ।

प्यारे देशबन्धुओ ! मै हरबार लिखा करता हूँ कि तुम्हें पश्चिमकी ओर जाना चाहिये, चीन जापानकी भी सैर करना चाहिये। प्राचीन समयमें हिन्दूयात्री, सन्यासी और विद्यार्थी लोग विद्याकी खोजमें सैकडों मील चलकर नदिया और बनारस जाया करते थे । अब विद्यादेवीने अपना प्रकाश पश्चिमकी ओर डाला है, इस लिये अब उन्हें पश्चिमकी ओर जाना चाहिये । जो लोग विदेश जाना चाहें पहले उन्हें निम्नलिखित पतेपर जबाबी कार्ड डालकर वहाँकी ज्ञातव्य बाते जान लेना चाहिये ।

श्रीयुत सुधीन्द्रमोहन बोस
न० १ अन्टी बागान लेन—**कलकत्ता** ।

बोस महाशय अमेरिका और जापान हो आये है और अब वे अपना जीवन देशसेवामें लगाना चाहते है ।

जो महाशय इग्लेड जानेके अभिलाषी हो उन्हे इस पतेसे पत्रव्यवहार करना चाहिए—

Editor, *Rajput Herald*
210, High Holborn, London, W.C.

मुसलमान नवयुवकोको चाहिये कि वे इस पतेसे पत्रव्यवहार करें—

Mr. *Dost Mohammad,*
Editor, *African Times,*
158, Fleet Street, London, E C.

लदनके एक अँगरेज़ सज्जन मि बारनने जैनमत धारण किया है। कुछ दिन हुए वे मुझसे मिले थे । वे एक योग्य और शिक्षित अँगरेज़

हैं। उन्होंने जैनधर्मपर एक पुस्तक लिखी है। उसकी कीमत ।।।) है। परन्तु वे उसे मुफ्त बाँटते है। भारतके जैनी युवकोंसे वे पत्रव्यवहार करनेके अभिलाषी है। उनका पता यह है—

Mr Herbet Warren Jaini,
84,Shelgate Road-London, S. W.

अब लन्दनमें मुस्लीम लीगकी तरह हिन्दू-सभा भी स्थापित होगई है। उसके अध्यक्ष ठाकुर जसराजसिह है। इस सभाका पजाबकी हिन्दूसभासे कोई संबंध नही है। बंगालसे जो विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करनेके लिये यहाँ आते है, वे खूब मिलजुल कर रहते है, परन्तु अन्य प्रान्तोंके विद्यार्थियोंका यह हाल नही है।

वास्तवमें देखा जावे, तो भारतवर्षमें सच्चे काम करनेवाले किसान ही है। वे ही सबके लिये अनाज पैदा करते है। उनकी शिक्षाका प्रबंध करना अत्यावश्यक है। भारतीय युवकोंको इस ओर ध्यान देना चाहिये। देहातोंमे जाकर उन्हें Political Economy सम्पत्तिशास्त्रके सिद्धान्त समझाना और साइन्सके द्वारा खेतीकी उन्नति करनेका मार्ग बतलाना चाहिये।

महाराजा नाभा, महाराजा बड़ौदा और महाराजा मैसूरने अपने अपने राज्योंमें शिक्षा मुफ्त कर दी है। महाराजा बर्दमान बहुतसे नवयुवकोंको छात्रवृत्ति देकर विलायत भेज रहे हैं। बाकी देशी राजाओं और नबाबोंको भी इसी ढँगपर शिक्षाप्रचारके कार्योंमें योग देनेके लिये उत्साहित करना चाहिये।

प्यारे भाइयो! अँगरेजी पत्रोंके सिवाय हिन्दी पत्रोंको भी पढ़ा करो। यदि अँगरेजी पत्र ही पढ़ना है तो इग्लेंड, फ्रांस, अमेरिका आदि स्वतंत्र देशोंके पत्र पढ़ो। यदि हो सके तो देशी पत्रोंमें साइंस और पोलिटिकल इकानोमी पर लेख लिखा करो। मतलब यह कि देशी

पत्रोंकी हर तरहसे सहायता करो और उन्हें अधिक उपयोगी बनाओ। समाचारपत्र राष्ट्रके दैनिक इतिहास है।

कुछ वर्ष हुए बाबू शरतकुमार घोषने, जो एक उत्तम लेखक है और लदनहीमें रहते हैं Prince of Destiny नामका एक उपन्यास लिखा था। इस उपन्यासकी प्रशसा सारे यूरोपीय सामायिक पत्रोने की थी। इसका जर्मन, फ्रेंच आदि कई भाषाओमे अनुवाद हो चुका है। इसके अध्ययनसे आपका हृदय मातृभूमिकी सेवाके लिये फडक उठेगा। इसका अनुवाद हिन्दीमें करके इसे प्रत्येक युवकके हाथमें देना चाहिये। इसका मूल्य २) है। यह भारतवर्षमे भी अंगरेजी पुस्तकविक्रेताओंके पास मिल सकता है।

राविन्सन क्रूसो और किस्सा सैटफ़ोर्टका अनुवाद उर्दूमें छप चुका है। इनकी कापिया मुझे लाहोरकी 'पजाब–पब्लिक लायब्रेरी' में मिली थीं। किसी पुस्तकप्रकाशकसे प्रार्थना करना चाहिये कि इन्हे छपाकर सस्ते दामोमे बेचे। इन पुस्तकोको प्रत्येक अँगरेज बालक पढ़ता है। इनके पढनेसे चरित्र सुधरता है और कर्मशीलता आती है। हिन्दुस्तानी युवकोको भी इनको पढना चाहिये।

मै कई बार अपने मित्र होल्डन सा० का हाल लिख चुका हूँ। यदि कोई भारतीय इनसे धर्म या साहित्य विषयपर पत्र व्यवहार करे तो वे बहुत प्रसन्न होगे। वे सूफी और वेदान्त पुस्तकोको बहुत पसन्द करते है। कबीर और हाफिजकी पुस्तकोंके अगरेजी अनुवाद रात दिन पढा करते है। हिन्दू तथा मुसलमानोको चाहिये कि अपने अपने धर्मके अँगरेजी ट्रैक्ट उनको भेज दिया करे। उनका पता यह है—

John Frederick Holden Esq
13 Upper Sandgate Road,
Folkestown, England.

जान फेडरिक होल्डेन
१३ अपर सेन्डगेट रोड **फालकेस्टन, इंग्लैंड।**

सातवाँ पत्र ।

जब जिस देशके बुरे दिन आते हैं—उसपर दुर्भाग्यका चक्र फिरता है, तब बहुधा उस देशके लोगोंकी महत्त्वाकांक्षा कम हो जाया करती है । यही हाल आज कल हमारा है । अमेरिकामें हरएक बालक कहता है कि हम बड़े होनेपर अमेरिकाके प्रेसीडेंट होंगे । इंग्लिस्तानके निवासी कहते है कि हम अंगरेज़ है, हम सब कुछ कर सकते है—सारी दुनियाँपर विजय पा सकते हैं । परन्तु हमारे देशमे जिसके मुँहसे सुनो, वह यही कहता है कि हम कुछ नही कर सकतें है—न व्यापार कर सकते है, न मशीनें बना सकते है और न सभ्य देशवासियोंकी बराबरीसें खड़े हो सकते हैं ! क्योंकि हम समझते है कि हम कमजोर है, दुर्बल है, अशक्त हैं, निकम्मे हैं, गुलाम है !

इस दुरवस्थाके कई कारण है । प्रथम तो यह कि हमें कालेजो और स्कूलोंमें योग्य शिक्षा नही मिलती है, दूसरे विदेशी भाषामे शिक्षा मिलनेसे हम किसी भी विषयमे परिपक्व नही हो पाते है । विदेशी भाषा एक कानमें पड़कर दूसरेसे निकल जाती है । इस लिये हमे अपनी भाषा अच्छी तरह सीखना चाहिये, अपनी भाषामें योग्यता बढाना चाहिये और अपनी भाषाके साहित्यको पुष्ट करना चाहिये । हरबर्ट स्पेन्सरका मत है कि ‘ विदेशी भाषा सीखना अपना समय खोना है । ’ तीसरे हमारी माताओके अपढ होनेके कारण वे हमारा बचपनसे चरित्रगठन नही कर सकती है । हमे उनसे निर्भीकता, कर्मशीलता, विद्यानुराग, सच्चारित्रता, स्वजातिप्रेम, स्वदेशप्रेम आदिकी शिक्षाके बदले डरपोकपन, द्वेष, झूठ, फरेब, आलस्य और अनेक कुसस्कारोंकी शिक्षा मिला करती है ।

अतएव हमें उत्तम पुस्तकें पढनेकी आदत डालना चाहिये । सब देशोंकी अच्छी अच्छी पुस्तकोंके अनुवाद कराकर देशभाषा (हिन्दी)

में छपाना चाहिये । विशेषतः उन पुस्तकोंका कि जिनमें ऐसे लोगोंके जीवनचरित हों जो निम्नस्थिति (रद्दी हालत) में पैदा होकर बडे हुए हों, अवश्य अनुवाद होना चाहिये । *

अंगरेजीमे एक पुस्तक है उसका नाम है–' रूसके महापुरुष ' Heroes and Heroins of Russia by J Prelooker. यह पुस्तक भी प्रत्येक भारतवासीको पढना चाहिये । इसके पढ़नेसे केवल मनोरंजन ही नहीं होता है, वरन् सहस्त्रों शिक्षायें भी मिलती है। मूल्य ३)रु० है। निम्न लिखित पतेसे मिल सकती है—

Anglo Russian office
21 Paternoster Square London.
एंग्लो रशियन आफिस,
२१ पेटरनास्टर एसक्वायर, **लन्दन** ।

एक और पुस्तक है उसका नाम है Tales & Jantasies by R L Stovenson. ऐसी पुस्तकोंके पढनेसे आत्मनिर्भरता आती है और चरित्रगठन भी होता है। मै प्रतिदिन सबेरे उठकर भगवद्गीताका पाठ किया करता हूँ । उसके पढ़नेसे मेरे विचार शुद्ध होते है, मनमें साहस पैदा होता है और मानसिक शक्ति भी बढती है । भगवद्गीतामे भगवान् श्रीकृष्ण

* हिन्दीमें एक ऐसी ही पुस्तक प्रकाशित हो गई है । उसका नाम ' कठिनाईमें विद्याभ्यास " है । इसमें ऐसे कर्मवीर और मेहनती लोगोंकी जीवनी लिखी गई है कि जिन लोगोने गरीबी और दरिद्रतामें जन्म लेकर अपने उद्योग मनन और परिश्रमके बलसे उच्च शिक्षा प्राप्त करके संसारमें महत्ता पाई है । ऐसी पुस्तकोंसे विद्यार्थियोंके मनमें विद्याभिरुचि, और विघ्न और आपत्तिके समय सहिष्णुता तथा महत्त्वाकाक्षा उत्पन्न होती है । जो गरीब निर्धन विद्यार्थी उच्च शिक्षा पानेके अभिलाषी हों उन्हें यह पुस्तक अवश्य पढ़ना चाहिये । इसका मूल्य आठ आने है और यह एस पी ब्रदर्स, झालरापाटन सिटी, तथा बम्बईके हिन्दी-ग्रन्थरत्नाकर कार्यालयसे मिल सकती है ।

उपदेश देते है कि—"हे अर्जुन ! तू शक्तिवान बन ।" कमजोरी पाप है । जो वस्तु हमें कमजोर बनाती हो उसे छोड देना चाहिये । मेरे एक मित्रने एक बार मुझे लिखा था—

Weakness is death, strength is life,
If you want to live, try to be strong
Mentally, Morally, Religiously & Physically

अर्थात्—" कमजोरी मृत्यु और शक्ति जीवन हैं । यदि तुम संसारमें रहना चाहते हो, तो मानसिक, नैतिक, धार्मिक और शारीरिक बलको बढ़ाओ । इस ससारमें निर्बलोंकी गुजर नही है ।"

उपनिषदोंमें एक शेर और भेडोंकी कहानी लिखी है । दुर्भाग्यवश एक शेरका बच्चा भेडोंके झुडमें पड गया और वह अपनेको भेड़ ही समझने लगा । बडे होनेपर एक दिन जब वह भेडोंके बीचमे चर रहा था, उस समय गीध, कौआ आदि मासलोलुपी जीवोंने आकर कहा, " हे वीर ! तुम भेड नही शेर हो, तुम इन भेडोके बीचमे क्यों चर रहे हो ? ये तो तुम्हारे भोज्य पदार्थ है ।" परन्तु उसे विश्वास न हुआ । एक दिन जब उसने पानी पीते समय अपना चेहरा पानीमें देखा, तब उसे अपना भ्रम समझ पडा—वह समझ गया कि मै भेड नही, शेर हूँ । बस फिर क्या था, वह भी शेरोके समान भेडोका शिकार करने लगा ।

हिन्दू भाइयो ! आप शेरोंकी औलाद है, आपके बदनमें शेरोंका खून दौड़ रहा है । आप महाराणा प्रताप और शिवाजी जैसे शेरोके वशज है, फिर आप अपनेको भेड क्यो समझते है ? तुम्हें ' मे में ' करना शोभा नहीं देता । तुम शेरोंकी तरह गर्जना सीखो, जिससे तुम्हारी गर्जनाको सुनकर दुनियाँ काँप उठे ! रात दिन यही खयाल रक्खो कि हम शेरोंकी औलाद है, विश्वविजयी भीष्म, द्रोण, अर्जुन, कर्ण आदि वीर हमी

लोगोंमें उत्पन्न हुए थे और अब भी हम वही बने हुए हैं, सिर्फ़ आत्म-विस्मृतिरूपी कायरताको त्याग कर विवेकरूपी नदीमें अपने चेहरोंको देखनेकी आवश्यकता है, फिर हम अपने असली स्वरूपको पहचान कर शेरके शेर बन जावेंगे।

एक कापी स्वामी विवेकानंदजीके 'राजयोग' की आज ही खरीद लो। इस पुस्तकको यूरोप अमेरिकावाले बड़े प्रेमसे पढते है। इसके पढनेसे तुम्हारी आँखें खुल जायेंगी और तुम्हें मालूम हो जायगा कि तुम्हारे अंदर कौन कौन शक्तियाँ छुपी पडी है और वे किस तरह काममें लाई जा सकती है।

आजकल यूरोपमे हमारे विषयमे बहुतसे झूठे विचार फैले हुए हैं। उनको दूर करना हमारा नितान्त आवश्यक कर्तव्य कर्म है। कुछ दिन हुए मैने एक व्याख्यान फोक्सटाउनमें ब्रह्मचर्यपर दिया था। वहा एक मनुष्यने खडे होकर कहा कि "स्पेन्सरने लिखा है कि हिन्दू शाकाहारी होनेके सबब कमजोर है और इसी कारण अंगरेज उनपर राज्य कर रहे है।" मैने उत्तर दिया कि "यह खयाल बिलकुल झूठ है। आयर्लेंड स्काटलेड और वेल्सके लोग रात दिन मास खाते हैं, फिर उनके मांसाहारी होनेसे उन्हें स्वराज्य क्यो नहीं मिल जाता?" मैने उन्हे बतलाया कि सिर्फ ब्रह्मचर्यके जोरसे ही ऋषियोने मृत्युपर जय पाई थी। जिस तरह लेम्पमें तेल ऊपर चढनेसे वह जलता है, यदि तेल ऊपर न चढकर नीचे उतरने लगे तो वह बुझ जावे, उसी तरह ब्रम्हचर्यसाधनसे वीर्य शरीरमे फैलता है और ऊपर चढता है, परन्तु असयमी बने रहनेसे शरीर जीर्ण होता जाता है। हमें वीर्यरक्षा द्वारा दिमाग़को पुष्ट करना चाहिये ताकि वह ज्ञानज्योतिके रूपमें परिणत हो जाय। हरवर्ट स्पेन्सर, लूथर, न्यूटन आदि–जिनका सन्मान सारा यूरोप कर रहा है–संयमी होकर ही बडे बड़े काम कर सके है।"

यहा मेरा एक हाल्डन नामक अंगरेज मित्र रहता है। वह हिन्दुओंकी पुस्तकें बड़े प्रेमसे पढ़ा करता है । उसकी उम्र अभी लगभग ३० वर्षकी है। वह ब्रह्मचारी है । उसने मांस मछली खाना बिलकुल छोड़ दिया है। वह भारतवर्षकी यात्रा भी करना चाहता है । वह यह भी कहता है कि मेरी मृत्युके पश्चात् मेरा शरीर जला दिया जाय।

हिन्दू नवयुवकोंको अपना शरीर दृढ बनाना चाहिये । क्योंकि शरीर दृढ हुए बिना महत्वाकाक्षा और सकल्पशक्ति प्रबल नहीं हो सकती है। अखाडे बनाओ और कुश्तिया लडो, जैसे कि हमारे बाप दादे लडते थे । खूब कूदो, उछलो और दौड लगाओ। शहरकी गन्दी गलियोमे रहनेसे हमारे मनमे अच्छे विचारोंका उदय नही हो सकता है। अतएव सबेरे नदी पर नहाने जाओ। अच्छी तरह नहाओ। इसमें भूल मत करो । बाहर जानेसे व्यायाम हो जाता है और शरीरको बहुत आक्सजन (प्राणप्रदवायु) मिल जाती है जिससे खून साफ़ होता है। इसके सिवा नदीके निर्मल पानीमे नहानेसे मन और शरीर दोनों पवित्र हो जाते है।

जब मै स्वदेश वापिस आऊँगा तब विदेशमे रहनेके ससर्गसे जितने दोष मुझमे आ जायँगे मै उन सबको गंगामे नहाकर बहा दूंगा।

मैने हालहीमे एक जापानीसे कुछ कुश्तीके पेच सीखे है। ये ऐसे पेच (दाव) है कि जिनके जाननेसे निर्बलसे निर्बल मनुष्य भी बडे बडे पहलवानोंको उठाकर पटक सकता है । आज कल जापानी लोग ये पेच अगरेजोंको रुपया लेकर सिखाते है । ऐसे पेच तुम्हें भी सीखना चाहिये। क्योंकि इनके सीखनेसे तुम अपने ऊपर भरोसा करने लगोगे ओर तुम्हारा साहस बढेगा।

जापानी लोग बडे बहादुर होते है; परन्तु यह बात याद रक्खो कि बहादुरीमें तुम उनसे कम नही हो, तुम उनके गुरु हो। जापानी कहते

है कि हमारा राजा मिकाडो आमवशके देवताओंमेंसे है। आमसे उनका मतलब श्रीरामचन्द्रजीसे है। क्योंकि जापानियोंकी भाषामें 'र' नही है, इसलिये वे रामको आम कहते है। उनके मदिरोंमें भी संस्कृतमें रामका नाम लिखा रहता है। इससे सिद्ध होता है कि किसी हिन्दू राजाने जो रामके वंशमेंसे था किसी समय जापानको जीता होगा। जापान राज्यमें प्रजापर अत्याचार नहीं होते है—वहांपर आज भी रामराज्य बना हुआ है। तुम्हे इस बातका हर्ष होना चाहिये कि आज भी हमारे राम और सीताका वशज, जापान सरीखे उन्नत और महाशक्तिशाली राज्यका स्वामी है। रमेशचन्द्र दत्तके लिखे हुए भारतवर्षके इतिहासको पढो। अंगरेज लोग अपने ही देशवासियोंके लिखे हुए इतिहासको पढते और आदर करते है। अतएव तुम्हे भी अपने ही देशवासियोंकी लिखी हुई प्राचीन इतिहासकी पुस्तके पढना पढ़ाना चाहिये।

गतवर्ष मैंने एक पत्र लेडी एमर्लीको—जो लार्ड लिटनकी बेटी है और धर्म प्रचारका काम करती है—भेजा था। मैंने उनसे पूछा था कि तुम ससारकी पुस्तकोंमें सबसे श्रेष्ठतर पुस्तक कौनसी समझती हो? उत्तरमे उन्होंने मेरे पास एक बारह पुस्तकोंकी सूची भेजी थी। उस सूचीमे जिस पुस्तकका नाम सबसे पहले लिखा था, वह श्रीमद्भगवद्गीता थी। उक्त लेडीका पत्र मेरे पास मौजूद है। वे बड़ी ही योग्य और सुन्दर रमणी है। वे अपने व्याख्यानमे भारतवर्षकी प्रशसा किया करती है। मै उनका एक व्याख्यान सुननेके लिए गया था। उस व्याख्यानमे उन्होंने कहा था कि—"भारतवर्षमे एक महर्षि पैदा होनेवाला है जिसके चरणोके समीप बेठकर सारी दुनियाँ ब्रह्मविद्या सीखेगी और जो मसीहसे भी बढ़कर होगा। वह महापुरुष हिन्दू घरानेमे जन्म लेगा।" उसी व्याख्यानमे उन्होने कलकत्तेके जगदीशचन्द्र बोसका वर्णन करते हुए कहा था कि आज वह ससारका सबसे बड़ा वैज्ञानिक है।

थोडे ही दिन हुए 'हिप्नाटिज्म' Hypnotism नामकी एक पुस्तक मैने पढी थी। उसमें लिखा था कि सूर्य बल और शक्तिसे भरा हुआ है। अतएव सूर्यकी तरफ मुँह करके खड़े हो जाओ और सांस लेते समय यह खयाल करो कि मै सूर्यसे शक्ति खीच रहा हूँ और उस शक्तिप्रवेशकी सनसनाहटका अनुभव कर रहा हूँ। फिर यह खयाल करते हुए अपनी गंदी सासको छोडो कि मै अपनी बीमारियों और कमजोरियोंको अपने अंदरसे निकाल रहा हूँ। इन लोगोंने ये सब बातें हमारे ऋषियोंसे ली है और अब इनका अंगरेजी नामकरण करके ये रुपये बटोर रहे है।

विलायतके प्रसिद्ध उपन्यासलेखक (Sir A Conan Doyle) कोनेन डायलने एक (Sharlock Home) 'शरलाकहोम' नामक जासूसी उपन्यास लिखा है। इसके पढनेसे बहुत लाभ होनेकी संभावना है। इस पुस्तकमें उन्होने भगवद्गीताकी शिक्षा बडी खूबी और विचित्रताके साथ सम्मिलित की है। इसमें कर्मफलका त्याग करनेकी उत्तम शिक्षा दी गई है। नैपोलियनका जीवनचरित भी पढ़ना चाहिये। क्योंकि नैपोलियनकी महात्वाकाक्षा वा सकल्पशक्ति इतनी प्रबल थी कि वह किसी बातको भी असभव नही मानता था।

अगरेज लोग वीर है। यदि तुम उनसे सन्मान पाना चाहते हो तो तुम भी वीर बनो। क्योंकि मैत्री और आदर सन्मानका भाव बराबरीहींमें होता है। अभी थोडे दिन हुए मै लंदनसे फालकेस्टन जा रहा था। मै रेलपर खिडकीके पास बैठा था, इतनेमें एक अगरेज आया। उसने आते ही कहा कि तुमने हमारी जगह लेली है। मैने उत्तर दिया—"यहाँ तुम्हारी कोई भी वस्तु नहीं है, मै यहासे नही उठ सकता।" यहाँके डब्बोंमें ऊपर सामान वगैरह रखनेके लिये तारोकी जाली लगी रहती है। वह कहने लगा—"ऊपर मेरी टोपी रक्खी हुई है।" मैने कहा—"तो अच्छा, ऊपर चढ़कर बैठ जाओ।" इसपर आसपास बैठे हुए सब स्त्री

पुरुष हँस पड़े। उक्त अंगरेज बिगड़कर यह कहके चला गया कि मै काले आदमीकी सूरत देखना पसन्द नही करता। पढे लिखे अगरेज ऐसा नहीं करते है, परन्तु अपढ और धूर्त लोग हिन्दुस्तानियोको अकसर तंग किया करते है।

जिस जहाजपर सवार होकर मै भारतवर्षसे विलायतको जा रहा था उसपर एक सिक्ख भी बैठा था। एक दिन वह स्मोकिंगरूम (तमाखू पीनेके कमरे) मे बैठा हुआ तमाखू पी रहा था। इतनेमें एक यूरोपियनने आकर सिक्खसे कहा कि तुम बाहर चले जाओ, पर सिक्खने अपनी कुर्सी नही छोडी। इसपर उस गोरेने क्रोधित होकर कहा—तुम काला आदमी, अभी यहाँसे निकल जाओ। उसका यह कथन पूरा भी न होने पाया था कि सिक्खने उठकर उसके गालपर एक चपत जमा दी। गोरा जहाजके कप्तानके पास दौडा गया। कप्तानने आकर सब हाल पूछा और जब उसे उस झगड़ेकी असलियत मालूम हो गई तब वह यह कहके चला गया कि मै इस झगडेमें दखल नही देना चाहता। इधर अन्य हिन्दुस्तानी जो जहाजपर बैठे थे उस सिक्खको धमकाकर कहने लगे कि तुमने साहबको मार कर बहुत बुरा काम किया। परन्तु साहब वीर था, वह वीरोंका सन्मान करना जानता था। उसने सिक्खकी निर्भीकतासे खुश होकर अपना टोप उतार कर उससे सलाम किया और उस घटनासे उन दोनोंकी मित्रता हो गई।

एक बार मै आक्सफोर्डसे लन्दन आ रहा था। मेरे साथ एक मुसलमान दोस्त भी था। मेरे उक्त दोस्तका भूलसे एक अगरेज़को धक्का लग गया। वह अगरेज रेलकी खिड़कीके समीप इतना डॅटकर बैठा था कि निकलनेको रास्ता ही न था। धक्का लगते ही उसने दरवाजा छोड दिया और हम दोनोंको बड़े प्रेमके साथ पास ही बिठा लिया। असली बात यह है कि अगरेज़ बहादुर जाति है-वह डरपोंक और हाँ हुजूर कहने-

वालोकी इज्ज़त नही कर सकती । यह उसके सिद्धान्तोंके विरुद्ध है । यदि हम लोग भी उनके संसर्गसे अपनी प्राचीन वीरताका एक अंश भी प्राप्त कर सकें तो वे हमारी इज्ज़त करने लगें ।

प्यारे देशभाइयो ! तुम डरपोंकपन छोडकर महाराणा प्रतापसिह और वीर शिवाजीके वंशज कहलाने योग्य बनो । इसके लिये तुम्हें अपने शरीर और मनको सुदृढ़ बनाना चाहिये । अपने मनमें महत्त्वाकाक्षा रखना चाहिये । महत्त्वाकांक्षा और संकल्पशाक्तिके अभाव ही से हमारी यह अधोगति हुई है । महत्त्वाकांक्षा ही तुम्हारी कौमी ज़रूरत है—तुम उसको प्राप्त करनेकी चेष्टा करो ।

आठवाँ पत्र ।

प्यारे देशभाइयो !

भारतवर्षमें ब्याह—शादीकी रस्मे (रीतियाँ) बहुत बेहूदी और हानिकारक है । इन कामोंमे ज़रूरतसे अधिक खर्च किया जाता है । वास्तवमें देखा जाय तो लड़केके बाप या लड़कीके बापकी शादी होती है—अथवा, नाई ब्राह्मणकी । जिनको जीवन भर साथ रहना है उनको कभी यह अवसर नही दिया जाता है कि वे एक दूसरेके गुणोंकी जॉच करें । यदि मातापिता ही वर-कन्याके गुणदोषोंका विचार कर लिया करते तो भी गनीमत थी, परन्तु ऐसा भी नहीं होता है ।

मेरे विचारमें आजकल विवाह-शादीमें अधिक रुपया ख़र्च न करके, इन रुपयोंको यूरोप, अमेरिका और जापानकी सैरमें लगाना चाहिये । प्राचीन समयमें दूर दूर देशोंके लोग हज़ारों मीलकी यात्रा करके भारतवर्षमें विद्या पढ़ने आया करते थे । अब समय बदल गया है । अब हमको भी विद्याप्राप्तिके लिये यूरोप अमेरिकादि देशोंमें जाना चाहिये ।

नवयुवकोंको जो कि कालेजोमें पढ़ते है गरमीकी छुट्टीमें जापानकी सैर कर आना चाहिये। इससे उनको और देशको बहुत लाभ पहुँचेगा। अब काशी और नदियामें क्या रक्खा है? अब स्वतन्त्र देशोंकी सैर करो और वहाँ जाकर विज्ञान, व्यापार और विद्याके चमत्कार देखो। अमीर हिन्दुओंको चाहिये कि वे पश्चिमी देशोंमे भ्रमण करके वहाँकी अच्छी बातें अपने देशमें प्रचलित करे। आज कल सच्चे तीर्थ पेरिस, लदन, न्यूयार्क, टोकियो आदि है। हे धर्मवीर हिन्दुओ! इन तीर्थोंकी यात्रा करके वहाँसे विज्ञानरूपी प्रसाद ले आओ और उसे देशवासियोंको बाँटकर उन्हें कृतकृत्य करके पुण्यभागी बनो।

अब अरबी फारसी पढ़नेमे समय नष्ट करना उचित नही है। यहाँ आकर जर्मन, फ्रेंच, इटालियन आदि भाषायें सीखो। यहाँका बच्चा बच्चा ये भाषायें सीखता है। जो लोग फ्रेंच या अन्य यूरोपीय भाषायें सीखना चाहते हों वे आज ही एक पत्र निम्नलिखित पते पर डालके नियमावली मँगा देखे। पता यह है।

School of Hewgo Esq.
Greek Church Street, London
स्कूल आफ ह्यूगो स्क्वायर,
ग्रीक चर्च स्ट्रीट–**लदन**।

इस कालेजमें सभी भाषाये पत्रव्यवहार द्वारा सिखलाई जाती है। फीस भी बहुत कम लगती है। दो रुपये मासिक देकर आप ६ महीनेमें घर बैठे फ्रेंच भाषा सीख सकते है। मैने भी यह भाषा इसी तरह सीखी है। जर्मन और फ्रेंच भाषामें उत्तम उत्तम पुस्तकें प्रकाशित होती है। इंग्लैंडके पुस्तक-प्रकाशक लोग उनको अंगरेजीमें अनुवाद कराके झट छपा डालते है और इस तरह अपने देशवासियोंको लाभ पहुँचाते है। यूरोपके देशमे फ्रेंच भाषा मुख्य समझी जाती है। इसी लिये उसे यूरोपकी Lingna

Franca कहते है । जितने प्रतिज्ञापत्र (अहद्-नामें) वहॉ लिखे जाते हैं वे सब फ्रेंच भाषामें लिखे जाते है । पेरिस संसारकी सभ्यताका केन्द्र समझा जाता है ।

इग्लिस्तानमें सबसे उत्तम साप्ताहिकपत्र जिसमें दुनियॉ भरके समाचार और विविध विषयके लेख छपते है Public opinion (सार्वजनक मत) है । यह लदनसे निकलता है और इसका प्रत्येक अक दो आनेमें मिलता है । इसकी ग्राहकसख्या भी लाखोके ऊपर है । समाचारपत्रोंसे सम्बन्ध रखनेवाले देशभाइयोंको इस पत्रकी एक प्रति हर हफ्ते रेल्वेस्टेशनोंपर मोल ले लेना चाहिये । इस एक ही पत्रके द्वारा वे दुनियॉ भरके समाचार पा सकेंगे ।

रामायणमें लिखा है कि जब लक्ष्मणजी बीमार हुए थे, तब वीर हनुमानने सजीवनी बूटी लाकर दी थी । अब हमारा देश बीमार है । हे भारतके सपूतो ! तुम हनुमान बनो और बाहर जाकर यूरोप और अमेरिकासे ऐसी बूटी ले आओ जिससे हमारी जातिके रोग दूर हो जावें । भारतके विश्वविद्यालयोंसे आग्रह करो कि वे अपने यहॉ फ्रेच, जर्मन, जापानी आदि भाषाओके पढानेका प्रबंध करे । ज्योंही तुमको इन भाषाओका थोडा थोड़ा ज्ञान हो जावे, तुम उन देशोकी सैरके लिये चल पडो । परन्तु जब तुम इग्लिस्तानको आओ, तो खूब रुपया लेकर आओ । क्योंकि यहापर रुपयोके बिना कालोकी बडी दुर्गति होती है । यदि यहॉ आकर तुम शाकाहारी होटल खोलना चाहते हो, तो अवश्य आओ । आजकल यहॉ मॉस मछली त्यागनेवाले बहुत है । यदि तुम भारतीय ढगसे खाना बनाना जानते हो तो यहॉ आकर सैकडों रुपया रोज़ कमा सकते हो ।

मादक नशैली वस्तुओंका व्यवहार छोड़ दो । इन मादक चीजोंके फन्देमें पड़कर लाखों होनहार युवक नष्ट हो जाते हैं । कसरत

करो और शाक भाजी खाओ । यदि मै झूठ कहता होऊँ तो मेरी बात मत मानो, पर सच कहता होऊँ, तो अवश्य मानो । महात्मा मैजिनीका कहना है कि—जो मनुष्य भूलसे कुमार्गपर जाता हो उसपर हमको दया करना चाहिये, परन्तु जो जानबूझकर भूल करता हो–उसकी सहायता ईश्वर भी नही करता है ।

नवाँ पत्र ।

मुझे विलायत आये आज पाच वर्ष हो गये । इस अवसरमे मै सदैव अपने देशकी दशापर सोच विचार करता रहा हूँ । इसी समयमें मैने यूरोपकी प्राय सभी प्रसिद्ध पुस्तकोंका अध्ययन किया है । बहुत सोच विचार और गवेषणाके बाद मै इन सिद्धान्तोंपर पहुँचा हूँ, जिनका लिख देना मै अपना कर्तव्य समझता हूँ ।

मैने सब प्रकारकी उन्नतिका केन्द्र निस्स्वार्थतामे पाया है । आज कल हमारी दशा शोचनीय है, इसका मुख्य कारण हमारी स्वार्थपरता ही है । अरबके मरुस्थलमें पानीके ठिकाने खोज लेना उतना कठिन नही है जितना कठिन भारतवर्षमे निःस्वार्थ नेताको खोज लेना है ।

ये शुहरत सारे चहते हैं, ये रखते है सब खुदगर्जी ।
हमे बेगर्ज लीडरकी तो भारतमें जरूरत है ॥

—स्वामी ।

प्यारे देशभाइयो ! जागो, कबतक सोते रहोगे ? तुम सहसा किसी भी अगुएकी बातपर विश्वास मत करो । यदि तुम अपने निर्धन देशसे सच्चा स्नेह रखते हो तो तुम्हे जीजानसे–प्राणपनसे मेहनत करना चाहिये । जब तक तुम देशसेवाके लिए प्रत्येक वस्तु त्यागनेके योग्य न हो जाओगे, तबतक तुम्हारा कोई भी कार्य ठीक न होगा । किसी बीमारीकी औषधि

करनेके पहले--इस बातका पता लगा लेना चाहिये कि वास्तवमें बीमारी कौनसी है । आज हमारी कहीं भी कोई इज्जत नहीं करता है--हम जहाँ जाते है वहीं धक्के खाते है । हमें पहले इसका कारण ढूंढना चाहिये और फिर उसका इलाज करना चाहिये ।

पहले तो आपको अपने खुशामदी स्वभावको छोड़ना होगा । आजकल भारतवर्षमें लोगोंकी ऐसी बुरी चाल पड गई है कि जहाँ किसी अमीरको देखते है कि सब लोग उसकी पूजा करना आरभ कर देते है । यदि तुम शिक्षित देशोंमें जाओ तो तुम्हें मालूम होगा कि वहा मान धनका नही, विद्याका होता है । जो अपनी जातिकी सेवा करते है--अपनी जातिके लिये परिश्रम करते है, लोग उनको देवताके समान मानते है । श्रीकृष्णचन्द्रने कहा है कि मनुष्य शूद्र या ब्राह्मण जन्मसे नही होता है । भला या बुरा कहलाना उसके कर्म्मोंपर निर्भर है । इस लिये तुम खुशामदी स्वभावको छोडकर उनकी प्रतिष्ठा करना सीखो जो अपने जीवनको तुम्हारी जातिके वा देशके हितमें लगा रहे है ।

आजतक किसी जातिने दूसरोंकी भाषामे देशसेवाका पाठ नही पढा है । हमारी भाषाओंमें बहुत कम पुस्तकें पढ़ने योग्य मिलती है । यदि तुम रोज पाच पृष्ठ अनुवाद कर सको तो एक वर्षमें लगभग डेड हज़ार पृष्ठोंका अनुवाद कर डालोगे। तुम इस तरह थोडे ही वर्षोंमें ससारकी उत्तम पुस्तकोंके अनुवादसे अपने साहित्यके भंडारको परिपूर्ण कर सकते हो। अनुवाद करनेसे तुम्हें भी लाभ पहुँचेगा। विविध विषयोंका ज्ञान हासिल करनेका इससे सीधा मार्ग शायद और दूसरा न मिलेगा। साथ साथ तुम्हारी जाति भी करवट बदल सकेगी ।

यदि तुम्हे अगरेज़ी आती है तो तुम आजहीसे अनुवादका कार्य प्रारंभ कर दो । ताश खेलना, गपशप उडाना आदि छोड़कर यदि रोज १ घंटा भी इस काममें खर्च करोगे तो प्रति दिन दो चार पृष्ठोंका

अनुवाद करना कोई कठिन काम नही है। पहले जान स्टुअर्ट मिलकी पुस्तक ' स्त्रियोंकी गुलामी ' का अनुवाद कर डालो। यह एक १०० पृष्ठोकी छोटी सी पुस्तक है। इसके पढनेसे तुम्हें मालूम हो जायगा कि स्त्रीजातिके प्रति तुम्हारा कर्तव्य क्या है। तुम अपनी बहनों और माताओको किस तरह उन्नतिके जीनेपर चढ़ा सकते हो। एकबार स्त्रियोंको शिक्षित कर दो, वे प्रत्येक काममें तुम्हारी सहायता करने लगेंगी। तभी तुमको गृहस्थीके स्वर्गीय सुखका आनंद मिल सकेगा। फिर तुम हरवर्ट स्पेन्सरके ग्रथोंका अनुवाद करके सस्ते दामोंमें बिकवाओ। स्पेन्सर की ' शिक्षा ' बहुत अच्छी पुस्तक है।*

जब यह कर चुको तब ' भारतीय सतानोंके नाम रामका संदेशा ' का अनुवाद करो। बुकर टी वाशिगटनका आत्मवृत्तान्त अवश्य पढ़ो ‡। तुम Carpenter कारपैन्टर सा० की पुस्तके पढ़ो। वे एक उत्तम विद्वान् और भारतवर्षके हितैषी है। वे इस देशको तीर्थके नामसे पुकारते है। स्वामी रामतीर्थ इनकी पुस्तकोंकी बडी कद्र करते थे। यदि तुम्हे ड्रामे (नाटक) पढ़ना हो तो Ibson इबसनके पढो। इबसन नारवेका रहनेवाला था। इसकी पुस्तकोके अनुवाद उर्दू और हिन्दीको छोड़कर सब भाषाओमे हो चुके है। इसके एक नाटकका सबसे अच्छा अनुवाद William Archer विलियम आर्करने किया और उसे Scott Company स्काट कपनीने छपाया है। रूसके महर्षि काउंट टाल्सटायके ग्रथ पढो।

भाइयो! उठो, यह समय सोनेका नही है। जागो और देश तथा जातिसेवाके लिये तैयार हो जाओ। तुम उठो, नीचेको झुको और

---

* इस पुस्तकका हिन्दी अनुवाद ' इंडियन प्रेस प्रयाग ' में छप चुका है। इसके सस्ते सस्करणकी बहुत जरूरत है।

‡ यह हिन्दीमे 'आत्मोद्धार'के नामसे छप चुका है। 'हिन्दीग्रन्थरत्नाकर—कार्यालय गिरगॉव, बम्बई'से मिल सकता है।

अपने देशकी थोड़ीसी मिट्टी उठाकर उसकी ओर श्रद्धाकी दृष्टिसे देखो । इसी भारतकी मिट्टीसे एक दिन भगवान् राम, कृष्ण, बुद्ध, महाराणा प्रतापसिंह, शिवाजी आदि जैसे सूरमा और धर्मज्ञ बने थे । उसकी इज्जत करो और जोरसे सारी दुनियाँसे कह दो कि हम भी उन्हीं महापुरुषोंकी संतान है ।

दशवाँ पत्र ।

अभी कुछ दिन हुए, स्वीटजरलेंडके एक प्रोफेसरसे मुझे मिलनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ । वह इंग्लिस्तानकी सैर करनेके लिये आया था। मेरी उससे बातचीत हुई । प्रसंगवश भारतकी चर्चा भी छिड गई । वह कहने लगा "मै भारतवर्षका हाल जाननेके लिये बहुत उत्सुक रहता हूँ । मैने रामायण, महाभारत, भगवद्गीता और शकुन्तला पढी है । प्राचीन समयमें हिन्दूजाति श्रेष्ठ मानी जाती थी, परन्तु अब क्या कारण है कि उसकी दशा ऐसी ख़राब हो गई है ?" मैने कहा—"इसके कई कारण है—एक तो देशमें एकताका अभाव है, दूसरे कुछ ऐसे पुरुष हिन्दूमुसलमानोंके लीडर (नेता) बन गये है कि जो दोनोको पथभ्रान्त (गुमराह) कर रहे है । तीसरे अब हिन्दुओंमे धर्मभाव और विश्वास नही रहा है । हम लोगोको भारतवर्षमे जो शिक्षा दी जाती है वह ऐसी खराब है कि उससे न तो नवयुवकोका चरित्रगठन ही होता है और न उनके मनमें जाति वा देशहितके विचार पैदा होते हैं ।

प्रोफेसर—तुम इसका इलाज क्यो नही करते ? राष्ट्रीय स्कूल खोलकर देशवासियोको योग्य शिक्षा दो ।

मैं—हमारे देशमें कुछ उच्चकोटिकी राष्ट्रीय संस्थायें हैं। उनमें प्राचीन ऋषिगणोंकी पद्धतिके अनुसार शिक्षा दी जाती है। उनमेंसे गुरुकुल, बोलपुरका ब्रह्मचर्याश्रम, रामकृष्णसेवाश्रम आदि संस्थायें गणनीय है।

प्रो०—मैने भी उनके विषयमें सुना है। मै भी स्वीटजरलेंडमें ब्रह्मचर्य फैलानेका उद्योग कर रहा हूँ।

मै—कई सौ वर्ष पहले हम लोग संसारमें सबसे अमीर थे। मिल्टन और शेक्सपियर भारतकी अमीरीके गीत गाते थे। कोलम्बसको भारतके खोजकी इच्छा ही अमेरिका ले गई थी। प्राचीन समयमें हमारे देशमें न तो इतने अकाल पड़ते थे और न प्लेगका नाम सुनाई देता था। परन्तु अब इन्हीं आपत्तियोंने हमारे नाकोंदम कर रक्खा है।

प्रो०—प्लेग और अकाल अब दुनियाँमें कही नहीं पडते हैं। तुम अपनी सरकारसे इनका अंत करनेके लिए अनुरोध क्यो नहीं करते?

मै—सरकार कुछ न कुछ करती ही है, परन्तु सर्व साधारणके शिक्षित हुए बिना ये दोष दूर नहीं हो सकते है।

प्रो०—तुम लोगोंको विदेशमे जाकर शिक्षा ग्रहण करना चाहिये। पूर्ण शिक्षित होनेके बाद फिर तुम अपने देशका उद्धार कर सकते हो।

मैं—दुर्भाग्यवश हमारे देशवासी जिनके पास रुपये होते है बहुधा पढनेके लिये इग्लेंड आया करते है। यहाँ पर हमलोगोंको बड़ी बडी कठिनाईयोंका सामना करना पड़ता है। यदि अरबी, चीनी, जापानी यहाँ आते है तो वे विश्वविद्यालयोंमें उसी समय भरती कर लिये जाते है, परन्तु हम लोगोंको बारह दरबाजे लाघना पड़ते है। आक्सफोर्डमे नाम भरती करनेके पहले हिन्दुस्तानी विद्यार्थियोंसे पूछा जाता है कि क्या तुम अगरेजीराज्यके खैरख्वाह रहोगे? यदि हाँ कहो, तो पूछते हैं कि इसका क्या प्रमाण है? फिर हुक्म दिया जाता है कि तुम लंदनजाकर मिस्टर अरनाल्डसे पत्र लिखा लाओ। जब हम लंदन

जाते है तब मि० अरनाल्ड यह कह कर टाल देते है कि भाई, मै तुम्हारी सहायता करना चाहता हूँ, परन्तु मै तुम्हारी चालचलन और तुम्हारे बापदादोंके विषयमें कुछ नही जानता, इससे लाचार हूँ । इस तरह हमें लंदनसे आक्सफोर्ड और आक्सफोर्डसे लदन तक फुटवालकी तरह भटकना पड़ता है। हमारी अपेक्षा जापानियोंकी बहुत इज्जत की जाती है।

प्रो०—तुम्हारे मुँहसे इन बातोंको सुनकर मुझे बड़ा खेद हुआ । तुम लोगोंको स्वीटज़रलेंड आना चाहिये । हमारे यहाँ प्रत्येक आदमी चाहे वह किसी रग या जातिका क्यो न हो समान दृष्टिसे देखा जाता है। विशेष कर भारतवर्षको तो हम बडे प्रेमके साथ स्मरण किया करते है। क्यों कि जिस देशने संसारके लिये भगवद्गीता जैसी पुस्तक दी है उसका सन्मान करना प्रत्येक देशका धर्म है । तुम मेरी बातोंपर विश्वास रक्खो । यादि महात्मा रामचन्द्र, श्रीकृष्ण आदिकी सतान हमारे देशमें शिक्षा पानेके लिये आवे, तो इस बातसे हम अपना गौरव समझेंगे । प्रोफेसेर साहबके सहानुभूतिपूर्ण शब्दोंको सुनकर मेरी ऑखोंमें ऑसू भर आये । मैने परमात्माको धन्यवाद दिया कि एक देश अब भी ऐसा है कि जो निर्धन और निस्सहाय हिन्दुओंकी इज्जत करता है। मैने उक्त सज्जनको धन्यवाद दिया और हाथ मिलाकर बिदा ली ।

मेरे नवयुवको ! यदि तुम्हारे पास रुपया है और तुम शिक्षा पाना चाहते हो, तो तुम्हें स्वीटजरलेडकी ओर ध्यान देना चाहिये । यहॉके विश्वविद्यालय ससारमें सबसे अच्छे गिने जाते है । जिस समय तुम वहॉं शिक्षाप्राप्त करनेको पहुँचोगे तो वे लोग तुम्हें सन्मानके साथ विद्यादान देंगे । वह देश पुकार कर कह रहा है कि हे संसारके लोगो ! यदि तुम्हें अकाल या प्लेग सतावे या कोई तुम पर अत्याचार करे तो तुम मेरे पास आओ, मैं तुम्हें विश्राम दूँगा और उन्नतिके उपाय बतलाऊँगा । प्यारे भाइयो ! इस पवित्र तीर्थकी आवाज सुनो और शीघ्र ही वहॉंको प्रस्थान करो ।

प्राचीन समयमें चीनी, जापानी, यूनानी और पारसी लोग भारतवर्षमें आकर विद्या सीखते थे। अब तुम भी उनके यहाँ जाओ। अब बनारस और नदियामें सिवाय मोटे पुजारियोंके और कुछ नहीं है। अब तुम्हें यात्राके लिये इग्लेड, जापान, अमेरिका, जर्मनी, इटली, फ्रांस, नारवे और स्वीटजरलेंडको जाना चाहिये। इन देशोंसे कलाकौशल्य, व्यापार, विज्ञान आदि सीखकर उनका प्रकाश अपने देशमें फैलाना चाहिये ताकि अपने देशमें वेदान्त और उपनिषदोंके फूल खिलें।

जब तक तुम स्त्रियोकी शिक्षाका प्रबध नहीं करोगे, कोई कार्य सफल न होगा। जिसमें स्त्रियॉ पैरकी जूती समझी जाती है उस देशमे महापुरुष कैसे पैदा हो सकते है? महापुरुष और देवता आकाशसे तो बरसते नहीं है—सब स्त्रियोसे ही पैदा होते, पलते और बड़े होते है। अतएव स्त्रियोंको सुशिक्षित करो। उन्हे रामायण और महाभारत पढ़ाओ और प्रतापसिंह, शिवाजी, पृथ्वीराज आदिके जीवनचरित सुनाओ। उनसे कहो कि वे बच्चोंको दूधके साथ वीरता और त्याग भी पिलाया करे। उनसे कहो कि वे भारतमे फिर भीम और अर्जुनके समान वीरबालक पैदा करे।

मेरे प्यारे मित्रो! यदि तुम अपने जातीय धर्मपर स्थित रहो और विदेशसे वर्तमानकालकी साइंस सीखकर उसे अपने देशमें फैलाओ तो फिर तुम्हारे मुकाबले ससारमें कोई जाति न रहेगी।

विलियम हाल नामक एक पादरी जो मेरा बडा मित्र है, फोक्सटनमें रहता है। उसकी उम्र ८० वर्षकी है, परन्तु देखनेमें वह युवा मालूम पडता है। वह खुली हवामें रहता है और अपने घरकी खिड़कियां हमेशा खुली रखता है। उसने मास मछली खाना भी छोड़ दिया है। वेदों और उपनिषदोंका बडा भक्त है। अभी भगवद्गीतापर उसने १०-१२ व्याख्यान दिये थे। वह मनुमहाराजकी शिक्षापर इतनी भक्ति

रखता है कि उसने बुढ़ापेमें अपनी सब जायदाद निर्धनोंको दान कर दी है। वह वर्तमानसमयका एक बडा भारी कवि है। उसका एक लडका लंदनमें जज है और दूसरा भारतवर्षके किसी कारखानेका मैनेजर है।

अभी कुछ दिन पूर्व पादरी साहबने 'त्याग' पर कई कवितायें यहाँके सामयिकपत्रोंमें प्रकाशित कराई थी। लोगोने उनकी बड़ी कदर की थी। इनको श्रीरामकृष्णपरमहसजीकी पुस्तके इतनी पसंद है कि ये उनको रात दिन पढा करते है। उन्होंने परमहसजीकी एक फोटोको अपने कमरेमें लटका रक्खा है। थोडे दिन हुए वे मुझसे मिलने आये थे। प्रसग-वश मैने उनको परमहंसजीकी एक कहानी सुनाई। मैने कहा कि "एक दिन परमहसजी अपने योग्य शिष्य विवेकानदजीसे कह रहे थे कि देखो गीताके नाममे भी त्याग है। 'गीता' 'गीता' कहनेसे ही त्यागकी प्रवृति होती है।" यह सुन वे बहुत खुश हुए। उन्होंने कहा "तुम लोग भी त्यागके साथ अपने देशकी सेवा करने पर उद्यत हो जाओ, फिर थोड़े ही समयमें देखोगे कि देशकी कैसी आश्चर्यजनक उन्नति हुई है।" हे परमात्मा! तू भारतवासियोंको ऐसी शक्ति प्रदान कर कि जिससे वे भारतमाताकी निःस्वार्थसेवामें तत्पर होकर ससारमें उसका मुख उज्ज्वल कर दिखलावें।

समाप्त